

भूमिका

अश्वघोष

'बुद्धचरितम्' के प्रत्येक सर्ग के अन्त में " इति श्री बुद्धचरिते महाकाव्ये"—इस प्रकार के शब्द मिलते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि बुद्धचरित महाकाव्य है। इसके रचयिता अश्वघोष के विषय में यद्यपि विद्वानों ने बहुत कुछ अनुसन्धान किया, तथापि उसके जीवनचरित का कोई इतिहास नहीं मिलता। अश्वघोष कब हुए—इसका ठीक ठीक पता नहीं।

मिस्टर बीज ने अपनी पुस्तक " संस्कृत बुद्ध चरित दि ईस्ट " की उद्गीर्णार्थी शिल्प की भूमिका में लिखा है कि अश्वघोष नाम के तीन व्यक्ति हो गए हैं—उद्देष्ट अश्वघोष, कनिष्ठ अश्वघोष, और आठवीं शताब्दी वाले अश्वघोष।

" बुद्धचरितम् " के रचयिता आठवीं शताब्दी वाले अश्वघोष नहीं हो सकते, क्योंकि इस ग्रन्थ का एक अनुवाद चीनी भाषा में पाँचवीं शताब्दी में हुआ था। इसका प्रमाण ट्सेनसांग और इतिवृत्त के लेखों में मिलता है। वह था ही अश्वघोष।

कनिष्ठ अश्वघोष इस ग्रन्थ के रचयिता नहीं हैं। तो निस्सं-
 ज्येष्ठ अश्वघोष ही बुद्धचरितम् के रचयिता हैं। अश्व-
 घोष का जन्म काश्मीर में हुआ था, परन्तु घसुमित्र ने उन्हें बौद्ध बना लि-
 या था। वह काश्मीर में रहने लगे और बारहवें बौद्धगुरु का
 शिष्य बन गए। वह सीधियन राजा कनिष्क के समकालीन थे
 कई स्थलों पर इस बात का जिक्र मिलता है कि वह कनिष्क
 का आचार्य थे।

बुद्धचरितम् की शैली

श्री कृष्णमाचार्य का कथन है कि अश्वघोष की शैली
 नितान्त सुगम है और जिस प्रकार के आडम्बर पौड्य के ग्रन्थ
 में मिलते हैं उनका इसमें सर्वथा अभाव है। प्रांफेसर कोवे
 का कथन है कि अश्वघोष की शैली मही और दुर्बल है
 परन्तु उसमें मौलिक शक्ति और सौन्दर्य है। उनके वर्णन
 दुर्बल नहीं हैं। वे कथावस्तु से ही अनुमेय हैं, और नैसर्गिक
 मंजरी की तरह कथावस्तु से ही प्रादुर्भूत होते हैं।

परन्तु काजिदास जैसी मनाहारिणी शैली अश्वघोष की
 नहीं है। बुद्धचरित की शैली त्रिबुज ठेठ और खुरदरी है,
 और बिना धरादे हुए प्रस्तरखण्डों जैसी ऊँची नीची है।
 परन्तु काजिदास की शैली सुन्दर गढ़े हुए चिकने संगमरमर
 की पट्टियों जैसी है। काजिदास को कथिता समझने में पाठक
 को घोर परिधम अथवा कदपनाकष्ट की आवश्यकता नहीं
 पड़ती। बुद्धचरितम् का अध्ययन करते समय पाठक को
 घोर धम करना पड़ता है मानों किसी पड़े बड़े कगारों और
 ढालों पर से बहने वाले पड़ाही-धौत को पार कर पाठक
 अपनी यात्रा पूरी कर रहा हो। कदाचित् इसका कारण यह

हो सकता है कि उस समय तक संस्कृत की कविता शैली का कोई निश्चित रूप नहीं बन पाया था और बौद्ध शैलियों की शैली प्रायः भरी और ऊबड़ खाबड़ हुआ करती थी।

बुद्धचरित में उन मनोहारो सौन्दर्य का अभाव है जो कि प्रायः संस्कृत काव्यों में इष्टिगोचर होता है। सामान्यभूत तथा सरलता का प्रयोग बहुलता से पाया जाता है।

प्रोफेसर बोवेर का कथन है कि चार काव्यों और अत्यन्त रमणीय तीन नाटकों के प्रणेता कालिदास ने बुद्धचरितम् को कदापि अपना आदर्श नहीं माना होगा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अनेक स्थलों पर ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिनमें दोनों कवियों की शब्दावली और विचार बहुत कुछ मिलते जुलते हैं, पर इससे यह नहीं कहा जा सकता कि कालिदास ने अश्वघोष का अनुकरण किया अथवा अश्वघोष के आदर्श पर अपने प्रयोगों की रचना की। बुद्धचरितम् के तृतीय सर्ग के १३ से लेकर २४ तक के श्लोक और एघुवंश के सप्तम सर्ग के १ से लेकर १४ तक के श्लोक विस्तृत मिलते जुलते हैं। इसी प्रकार बुद्धचरितम् के प्रथम सर्ग के श्लोक २७, ३०, ३१, ३४ एघुवंश के द्वितीय सर्ग के ७७ वें श्लोक, चतुर्दश सर्ग के आठवें श्लोक, प्रथम सर्ग के मातृप श्लोक तथा एकादश सर्ग के ३७ वें श्लोक से मिलते जुलते हैं—गौर और वाक्यावली की समता है। और भी अनेक स्थल हैं जहाँ पर दोनों कवियों की विचार-धारा मिलती जुलती हुई है। परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होना कि कालिदास ने अश्वघोष का अनुकरण किया है।

बुद्धचरितम् में वर्णन का औचित्य नहीं है। जिन स्थलों पर बहुत उच्छ्वासादि की नैतिक भावना जागृत की जा सकती थी, उनको कवि ने दो पंक्तियों में वर्णन करके समाप्त कर

दिया है। नायक की माता की मृत्यु का वर्णन इस प्रकार किया है मानों वह अत्यन्त साधारण घटना हो। इसके विपरीत राजा के पिता महाराज रघु की मृत्यु का वर्णन पद्विप—रघु अष्टम सर्ग—श्लोक २५—३० ; कितना गौरवपूर्ण, प्रभावशाली और हृदयविदारक वर्णन है।

यद्यपि अश्वमेध का अन्तिम लक्ष्य दार्शनिक दृष्टि बहुत उच्च कोटि का है, तथापि जिस प्रकार की भाषा उन्होंने दृश्यों और वृत्तान्तों का चित्रण किया है उसमें दार्शनिक की झलक आ जाती है। अन्ततः गन्वा यही कहना पड़ता कि बुद्धचरितम् बहुत ही निरुत्कृष्ट कोटि का काव्य है।

श्री हनुमते नमः

बुद्धचरितम्

तृतीयः सर्गः

ततः कदाचिन्मृदुशाद्वलानि
पुंस्कोकिलोद्भादितपादपानि ।

शुभाव पद्माकरमण्डितानि

शीतेन षड्दानि स काननानि ॥ १ ॥

ROSE ORDER :—ततः स कदाचित् मृदुशाद्वलानि पुंस्कोकि-
लोद्भादितपादपानि पद्माकरमण्डितानि शीतेन च षड्दानि
काननानि श्रुत्वा ।

INDI TRANSLATION :—तब एक बार उन्होंने उन जंगलों के
विषय में सुना जिनमें कोमल घासमरे मैदान (जहाँ-जहाँ
रहे) थे, कोपले के शब्दायमान वृक्ष खड़े थे, और जो
कोमल के सरोपेरों से सुगंधित तथा टंडक से भरे थे ।

ENGLISH TRANSLATION :—Then, once upon a time,
he heard of forests which flourished with soft mea-
dows ; in which trees resounded with the cooings
of the *Kokilas* ; and which were adorned with
pools of lotus and were filled with froet.

PURPORT IN SANSKRIT :—एकदा स राजकुमारः पुरकाननानां
शोभासम्परेण इहं श्रुत्वा पत् पुरकाननेषु कोमलशब्दपुलानि

सैत्राणि विराजन्ते, वृक्षाद्यामुपरि होकित्राः मयुरं कृतानि वनानि कमलद्वयैः सुगोमितानि शैत्येन च मन्त्रि

Metre:—उपज्ञानि । अनन्तरादोरिवज्रममात्री पादौ यदपज्ञातयस्ताः । उपज्ञाति metre is formed from combination of the two metres, viz., Indravajra and Upendravajra.

इन्द्रवज्रा

इन्द्रवज्रा consists of 11 syllables in each quarter. It has been defined as स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः, i. e. each quarter of Indravajra consists of ठ ग घ, त ग ष and two long syllables ; e. g.

स्या	दि	इन्द्र	—गुरु, गुरु, लघु—तगघ
व	आ	य	—गुरु, गुरु, लघु—तगघ
दि	तौ	ज	—लघु, गुरु, लघु—तगघ
गौ	गः		—गुरु, गुरु

Thus it may be seen that there is तगघ, तगघ, ज गुरु, गुरु, in each quarter of इन्द्रवज्रा.

उपेन्द्रवज्रा

उपेन्द्रवज्रा also consists of 11 syllables in each quarter. It has been defined as उपेन्द्रवज्रा जगतास्तौ गः, i. e., each quarter of Upendravajra consists of तगघ, तगघ and two long syllables, e. g.

श्रेयःसि विद्यासने. वृत्तमन्त्रिणम् वासिष्ठाः सप्तदश
नामि यमानि कर्मजद्वये. सुमानिनामि श्रेयसि च वृत्त
मन्त्रि

Metre — इन्द्रवज्रः । यथा इन्द्रवज्रः इन्द्रवज्रमन्त्रो यथा इन्द्रव
ज्रमन्त्रः । इन्द्रवज्रः metre is defined as a
combination of the two metres viz., Indravajra
and Upenravajra

इन्द्रवज्रा

इन्द्रवज्रा consists of 11 syllables in each quarter. It
has been defined as इन्द्रवज्रा मन्त्रि नो जगो वा, i.e.
each quarter of Indravajra consists of न ग य, वा,
जगय and two long syllables . . .

स्या	दि	(न्द्र—गुरु, गुरु, लघु—नगय
व	आ	(य—गुरु, गुरु, लघु—नगय
दि	तो	(ज—लघु, गुरु, लघु—नगय
गो	वाः		गुरु, गुरु

Thus it may be seen that there is नगय, नगय, जगय,
गुरु, गुरु, in each quarter of इन्द्रवज्रा.

उपेन्द्रवज्रा

उपेन्द्रवज्रा also consists of 11 syllables in each quar-
ter. It has been defined as उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गो,
i.e., each quarter of Upendravajra consists of नगय,
जगय and two long syllables . . .

(अ) व (इ)—जघु, गुट, जघु—जगय
 (व) आ (उ)—गुट, गुट, जघु—तगय
 (त) जा (ए)—जघु, गुट, जघु—जगय
 (ता) गी—गुट, गुट,

Thus it may be seen that there is जगय, तगय, जगय, गुट, गुट in each quarter of उपेन्द्रवज्रा ।

उपमाति

उपमाति contains the characteristics of Indravajra in some of its quarters, while in others it contains the characteristics of Upendravajra. There is no imitation as to how many and which quarters ought to contain the characteristics of Upendravajra, and how many and which quarters ought to contain the characteristics of Indravajra ; e. g.,

तगय (अ) त (इ) तगय (उ) जगय (ए) गु (आ) गु (इ)
 भु त्वा त तः स्वी ज न व इ भा जा

(This quarter is that of Indravajra)

जगय (अ) जा (इ) तगय (उ) गु (ए) जगय (आ) गु (इ)
 म जा ज भा व गु र का न ना मार

(This quarter is that of Upendravajra)

जगय (अ) म (इ) तगय (उ) जगय (ए) गु (आ) गु (इ)
 व दि म वा वा व न का र गु नि

(This quarter is again that of Upendravajra)

तग्य म न्न हृ ह नग्य न न ह वा व यु

(This quarter is that of Indravajra)

Thus it can be seen that the first and the quarters of this verse contain the characteristic Indravajra and the second and the third quarters contain the characteristics of Upendravajra. There is no fixed rule for the order of combination—any quarter may be that of Indravajra, and any may be that of Upendravajra. At any rate, there must necessarily be the combination of the two metres (Indravajra and Upendravajra) in an Upajati metre.

NOTES.

1. ततः—तदनन्तरम्, तत्र, afterwards, इसके बाद अर्थात् पुत्र पैदा होने के बाद तथा द्वितीय सर्ग में वर्णित घटनाओं बाद, i. e., after the birth of the son and the incidents narrated in Canto II.
2. कदाचित्—एक बार, once upon a time.
3. मृदुशाद्वजानि—मृदु—कोमल, soft; शाद्वल—शाद्व means short grass ; शादाः सन्ति अत्र इति शाद्वलम् meaning घासमरा मैदान, meadow, greensward. The formation of the word by the addition of वलच् is by नडशाद्वइ वलच् (पाणिनि IV, ii, 28). मृदुनि शाद्वजानि येषु तानि मृदुशाद्वजानि qualifying

घासमरे मैदान (जटजटा रहे) थे, which flourished with soft greenwards.

पुंस्कोकिलोद्घादितपादपानि—पुमांसघ से कोकिलाः इति पुंस्कोकिलाः (कर्मधारय) तैः उद्घादिताः पादपाः (वृक्षाः) येषु तानि (बहुव्रीहि), पुंस्कोकिल—कोयल, *kokil*; उद्घादित—शब्दित, resounded with; पादप—वृक्ष, tree. सारे समास का अर्थ हुआ—जिनमें कोयलों से शब्दायमान वृक्ष थे, in which there were trees that resounded with Kokilas.

पद्माकरमंडितानि—पद्माकर means पद्मखनि, कमल का सरोवर, a large tank or pond abounding in lotuses. मंडितानि means भूषितानि, शोभायमान, adorned. पद्माकरैः (पद्मसरोवरैः) मण्डितानि (भूषितानि) इति (तृतीया ल्युट्), पद्म के सरोवरों से शोभायमान, adorned with pools of lotus.

शीतेन—शीत्येन, टंडक से, by cold or frost.

धरानि—युक्तानि, filled with.

काननानि—वनानि, जंगलों के विषय में, about the forests, i. e., about the merits of the forests, for forests cannot be heard.

ध्रुत्वा ततः शीघ्रनवल्लभानां

मनोऽभारं पुरकाननानाम् ।

धृतिः मयाणाय चकार धृद्धि-

मन्तर्दृष्टे नाग इवावरुद्धः ॥ २ ॥

PROSE ORDER :—ततः स्त्रीजनवल्लभानां पुरकान्त-
मनोक्षमायं श्रुत्वा [मः] अन्तर्गृहे अथन्दः नागः इयं
प्रयाणाय बुद्धिं चकार ।

HINDI TRANSLATION :—तब, स्त्रियों को प्रिय लगने वाले
गहरी जंगलों की गोमा के विषय में सुनकर, उन्होंने,
के अन्दरूनी कमरे में बन्द हाथी के समान, बाहर जाने
का निश्चय किया ।

ENGLISH TRANSLATION :—Then, having heard of the
loveliness of the urban forests which were pleasing
to the ladies, he resolved to go out like an
elephant, shut up in the inner apartments of a
house.

PURPORT IN SANSKRIT :—तानि कान्तानि स्त्रीणामन्यन्
प्रियाणि धामन् । तेषां सौन्दर्यस्य वर्णनं श्रुत्वा म बहिर्गता
भ्रमितुं तथैव मोत्कयटो यमूष यथा अन्तर्गृहे पिनद्धः गजः
बहिर्गत्वा भ्रमितुं मोत्कयटो भयति ।

METRE :—उपजाति । अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदी-
याधुपजातयस्ताः । उपजाति metre is formed from the
combination of two metres, viz., इन्द्रवज्रा and
उपेन्द्रवज्रा ।

NOTES.

1. स्त्रीजनवल्लभानाम्—स्त्रियः एष जनः इति स्त्रीजनः ladies,
स्त्रियां, कमंधारय समान, स्त्रीजनस्य वल्लभानि इति स्त्री-
जनवल्लभानि, तेषाम्, स्त्रीजनवल्लभानाम् (पण्डी तत्पु०) ;
वल्लभ means dear, agreeable, प्रिय ; the whole
compound means “ स्त्रियों को प्रिय लगने वाले, charm-

ing or pleasing to the ladies. This entire expression qualifies काननानाम् ।

पुरकाननानाम्—पुरे काननानि अथवा पुरेस्थितानि काननानि, सेषाम् (मत्समी तत्पुत्र) कानन means जंगल, forest, पुरकाननानाम् means शहर के जंगलों की, of the urban forests.

मनोहरभावम्—मनोहरताम्, सुन्दरताम्, मनोहारिताम्, सुन्दरता, गोमा, loveliness, beauty, agreeableness, charming appearance, मनोहरश्चासौ भावश्च इति मनोहरभावः, तम् (कर्मधारय) ।

श्रुत्वा—निश्चय, आकर्षण, सुनकर, having heard, श्रु + क्त्वा ।

अन्तर्गृहे—घर के अन्दरूनी कमरे को अन्तर्गृह कहते हैं, the inner apartments of a house (Apte's Dictionary); अन्तःस्थं गृहम् इति अन्तर्गृहम् ।

अवरुद्धः—रोधं प्रापितः, बन्द हुआ, shut up, अव + रुध् + क्त ।

भागः इव—गजः इव, हाथी के समान, like an elephant.

बहिः—गृहान् बहिः, घर से बाहर, outside the house.

प्रयायाय—गमनाय, जाने के लिए, to go, प्र + या + ल्युट्, चतुर्थी एक वचन, तुमर्थात् भाववचनात् इति तुमर्थे चतुर्थी ।

बुद्धिम् अकार—मतिं कृतवान्, घेच्छन्, संकल्प किया, इच्छा को, resolved ; बुद्धि = √ बुध् + क्तिन् । अकार is the जित् लकार of √ अ; in the third person, singular number, परस्मै पद् ।

ततो नृपस्तस्य निशम्य भावं
 पुत्राभिधानस्य मनोरथस्य ।
 स्नेहस्य लक्ष्म्या वयसश्च योग्या-

भाज्ञापयामास विहारयात्राम् ॥ ३

PROSE ORDER:—ततः स नृपः पुत्राभिधानस्य मनोरथस्य भावं निशम्य स्नेहस्य लक्ष्म्याः वयसः च योग्यां विहारयात्राम् आज्ञापयामास ।

HINDI TRANSLATION:—तब राजा ने, पुत्र कहजाने वाले मन की इच्छाओं के पूर्ण करने वाले उन (गौतम) इच्छा को सुनकर, अपने प्रेम तथा प्येद्वर्य और वयस की अवस्था के अनुरूप मनोरंजनार्थ यात्रा करने की आज्ञा दे दी ।

ENGLISH TRANSLATION:—Then, the king, having heard the inclination of him who was called son and who was (therefore) the fulfiller of wishes, ordered him a pleasure-trip suited to his own affection and wealth, and to the age (of his son, Gautam).

PARAPHRASE IN SANSKRIT:—तदा नृपः पुत्रस्य इच्छां ज्ञायामास । यात्रादुच्छ्रितं राज्ञः प्रेम पुत्रं प्रीतिं बभूव, यावत् तस्य प्येद्वर्यं बभूव, यादृशी च गौतमस्य अवस्था आसीत्-तत्सर्वस्य योग्यां यात्राम् आज्ञापयामास ।

METRE:—उपजाति

NOTES.

1. पुत्राभिधानस्य—अभिधान means नाम, name, denotation, पुत्रः इति अभिधानं यस्य स तस्य (बहु०), जिनका

नाम पुत्र या, पुत्र बोले जाने वाले, of him who was called his son. This entire compound qualifies "तस्य" ।

मनोरथस्य—मनसः रथः इति मनोरथः तस्य, a conveyance of the mind ; hence, one who was the fulfiller of all wishes. मन की इच्छाओं को पूर्ण करने वाले उस (गौतम) का ।

भावम्—इच्छाम्, inclination.

निश्रव्य—श्रुत्वा, सुनकर, having heard. नि+√शम्+ल्यप् ।

स्नेहस्य (योग्याम्)—स्वप्रेम्याः अनुरूपाम् यात्राम्, अपने प्रेम के अनुरूप यात्रा (के लिए), अर्थात् शुद्धोदन का जितना प्रेम था, उस प्रेम के योग्य, suited to his own affection.

जङ्गमाः (योग्याम्)—सम्पत्तेः, वैश्वर्यस्य, धन के, of wealth. वयस- (योग्याम्)—अवस्थायाः, गौतमस्य इति यावत्, गौतम की उम्र के (अनुरूप) suited to the age of (Gautam), i. e., the king ordered for him a travel which was appropriate to Gautam's young age.

योग्याम्—अनुरूपाम्, उचिताम्, suited to, appropriate to.

विहारयात्राम्—विहार=वि/हृ+घञ्, meaning recreation, pleasure, pastime, diversion, मनोरञ्जन, सैरसपाटा । विहाराय यात्राम् इति (अनुर्यो तत्पुट्य) । The meaning is "a trip for recreation" or "a pleasure-trip." सैरसपाटे के लिए यात्रा ।

आज्ञापयामास—आदिदेश, आज्ञा दी, ordered.

HINDI TRANSLATION.—नव राजमार्ग से अंगूठों, गड़बड़ इन्द्रिय वालों को, बूढ़ों और रोगियों को, मिथमंगों को, बड़ी गालि से, हटाकर सड़क से जोमा कर दी।

ENGLISH TRANSLATION.—Then, they beautifully decorated the highway by removing, with conciliatory methods, all those who were devoid of minor limbs, who had impaired organs of sense, the old, the ill, etc. and the wretched beggars.

PERFORM IN SANSKRIT :—राजमार्गांश्च अवयवविकृतान्, कुरुगान्, वृद्धान्, नीचादीन्, हीनान्, याचकान्, महता गाल्येन (आर्जयेन) दूरीकृत्य राजमार्गं जोमादिना उपहृष्टां जोमां चकः।

METRE :—उपजाति।

NOTES

1. अवयवहीनान्—अवयवहीनान् (मृत्वीया तत्पु०) अवयवों से रहित, bereft or devoid of minor limbs such as the nose, the fingers.
2. विकलेन्द्रियान् - विकल, defective, impaired, से भरी, विकारपूर्ण। विकलानि इन्द्रियाणि येषां ते, (बद्धर्षादि), जिनकी इन्द्रियां गड़बड़ थीं, जिनकी विकार पूर्ण थीं, those whose organs of sense defective.
3. व्रीहानुगदीन् :—व्रीह, decrepit, old persons, रोगी, ill. व्रीहानुग आनुग इति व्रीहानुगा, (बद्धर्षादि) से आद्य येषां तन् (बद्धर्षादि), बूढ़ तथा रोगी लोगों को, the old, the ill etc.

HIS — राजमार्गं श्रीमान् सुगोभितं करद्वये जाने पर, श्रीमान् राजमार्गं नाम सुगोभितं नौकराणां चरणात्, राजमार्गं करद्वये जाने पर, श्रीमान् सुगोभितं करद्वये जाने पर, श्रीमान् सुगोभितं करद्वये जाने पर ।

ESSENCE OF — राजमार्गं श्रीमान् सुगोभितं करद्वये जाने पर, श्रीमान् राजमार्गं नाम सुगोभितं नौकराणां चरणात्, राजमार्गं करद्वये जाने पर, श्रीमान् सुगोभितं करद्वये जाने पर, श्रीमान् सुगोभितं करद्वये जाने पर ।

PERFECT IN SANSKRIT. — राजमार्गं श्रीमान् सुगोभितं करद्वये जाने पर, श्रीमान् राजमार्गं नाम सुगोभितं नौकराणां चरणात्, राजमार्गं करद्वये जाने पर, श्रीमान् सुगोभितं करद्वये जाने पर, श्रीमान् सुगोभितं करद्वये जाने पर ।

METRE :—उपजाति ।

NOTES

1. राजमार्गं श्रीमति कृते सति—श्रीमान् means beautiful charming; the entire expression means राजमार्गं विभूषितं (सुगोभितं) करद्वये जाने पर, the highway having been made beautiful. The locative case राजमार्गं is according to the aphorism यस्य च भावमाश्लक्ष्यम् । This is also called locative absolute सति सप्तमी, or भावे सप्तमी ।
2. श्रीमान्—लक्ष्मीवान् illustrious, great. श्रीः विद्यते इति श्रीमान् । श्री + मनुप् ।
3. विनीतानुचरः—विनीत, disciplined, trained. अनुचरः attendant, नौकर; विनीताः अनुचराः यस्य स (बहुवचनम्)

- १ निरीरुह—कावलावृष्ट, शंखवृष्ट, having garland, निर् + ईरु + कृत् ।
 २ वःश्या—वाश्या, शब्दम्, वशनेन by speech. The base वाशु is declined वाशु, वाशो वाश ।
 ३ आज्ञापयति वर—आज्ञा दे ही, gave permission
 ४ एतम्—गीतम्, गीतम् वा ।
 ५ वनेटान्—प्रेम्णा, प्रेम के कारण, on account of love
 ६ मनसा—मन से, from his heart
 ७ न मुञ्चति—नहीं छोड़ा, did not leave

ततः स आभून्महापटुभृद्भिः
 चतुर्भिर्निभृत्स्फुरंगैः ।

अश्लीषविद्युत्पुच्छिरदिग्धारं

दिरण्यं स्पन्दनमाश्रोह ॥ ८ ॥

PROSE ORDER 1—ततः स आभून्महापटुभृद्भिः चतुर्भिः
 निभृत्ः स्फुरंगैः सुतम् अश्लीषविद्युत्पुच्छि-दिग्धारं दिरण्यं
 स्पन्दनम् आश्रोह ।

HINDI TRANSLATION 1—तब वह (राजकुमार) सुयज्ञ के
 आभूषण पहने हुए चार विभीषण घोड़ों से जुते हुए, तथा
 बड़ी तेज़ बिजली की सी उज्ज्वल किरण वाले सुमहले रथ
 पर चढ़ गया ।

ENGLISH TRANSLATION :—Then he mounted the golden
 chariot which emitted continuous radiance bright
 like that of powerful lightning, and to which were
 yoked four gentle horses wearing golding tra-
 pings.

PERFOOT IN SANSKRIT—ततः राजपुत्रः एकप्रत्यस्तं प्रकाश-
 मानं रथम् आश्रोह । तस्मिन् रथे चत्वारः विभीषाः

बु० अ०—२

व्यन्दनम् अश्लीषविद्युत्सुविरदिमधारं व्यन्दनम् (बहुमीदि)
 ऐसा रथ जिसमें से प्रबलद्विजिगी की सी चमकमानी
 विरद्यर्षकिया निकाल रही थीं, a chariot whose streaks
 of rays were radiant like a powerful lightning
 दिव्यमयम्—सुवर्णमयम् .सोने का. of gold.

व्यन्दनम् —रथम् , chariot.

आदरात्—शुद्ध सथा. mounted.

ततः प्रकीर्णोऽम्बुजपुष्पमालम्

विपक्तमाल्यं प्रचलत्पताकम् ।

मार्गं प्रवेदे सदशानुयात्र—

इत्यन्द्रः सनक्षत्र इवान्तरिक्षम् ॥ ९ ॥

ROSE ORDER :—ततः सनक्षत्रः इन्द्रः अन्तरिक्षम् एव
 प्रकीर्णोऽम्बुजपुष्पमालं विपक्तमाल्यं प्रचलत्पताकं मार्गं सद-
 शानुयात्रः सः कुमारः प्रवेदे ।

INDI TRANSLATION :—जिस प्रकार नक्षत्रों के समान इन्द्रमा
 आकाश में प्रवेश करता है, उसी प्रकार अपने अनुसूच्य मौकर
 आकरों के साथ राजकुमार मार्ग पर आए जिस पर श्वेत
 पुष्प बिलारे हुए थे, मालाएँ लटकी हुई थीं, और फड़फड़ाती
 पताकाएँ सुनोभित थीं ।

ENGLISH TRANSLATION :—The prince, with a suitable
 retinue, came on the road which was strewn over
 with a network of white (bright) flowers, which
 had festoons suspended, and which had fluttering
 flags standing alongside; just as the moon accom-
 panied by the stars appears in the sky.

REPORT IN SANSKRIT :—येन प्रकारेण नक्षत्रैः परिवृतइन्द्र-
 माः आकाशे उद्देति तेनेव प्रकारेण सुजितिनैः नक्ष्रैः अनुसूचरैः

were suspended: प्रथमपथाकम्—प्रथमत्—द्विलते हुए, fluttering, पथाका—flags, प्रथमंयः पथाकाः यस्मिन् सः समं बहुमोदि), qualifying मार्गम्, जिस पर कड़ाकड़ाती हुई लाकारे काढ़ा रहो थीं, which had fluttering flags standing alongside, along which there stood fluttering flags. रट्टगानुशयः—रट्टग—अनुसय, suitable; befitting; अनुसय—अनुसयम्, a following, retinue, train, रट्टगानुशयान् वस्य सः (बहुमोदि), qualifying राजकुमारः, जिसके साथ अनुसय मौकर थाकर थे, who had a suitable retinue along with him, who was accompanied by a suitable train

कीतुहलात् स्फीततरैश्च नेत्रैः

नीलोत्तरीः किं नु विकीर्यमाणः।

जनैः जनैः राजपथं जगाहे

पौरैः समन्ताद्भिवीक्ष्यमाणः ॥ १० ॥

PROSE ORDER :—कीतुहलात् पौरैः स्फीततरैः नेत्रैः समन्ताद् भिवीक्ष्यमाणः नीलोत्तरीः किन्तु विकीर्यमाणः सः जनैः जनैः राजपथं जगाहे ।

HINDI TRANSLATION :—जब कीतुहलवश पुर वासियों द्वारा आँखें काढ़-काढ़ कर आँखें आँखों से बह देते जा रहे थे तो माधुम हँसा था कि मार्गों के नीचे कमलों से बिलेरे जा रहे हैं। इस प्रकार वह राजकुमार धीरे-धीरे राजमार्ग पर खले जाते थे ।

ENGLISH TRANSLATION :—Gazed at from all sides by citizens on account of curiosity with eyes open wide (with delight), he was, as it were, strewn

strumental is to be explained by the aphorism हेतोर्
 तृतीया as in सौम्यगुणेः दीप्तस्य भावः दीप्तता तथा दीप्ततया ।
 वयसिद्वे-षः धातु, लिट् लकार, प्रथम पुंस्य, बहुवचन, मन्सकार
 क्रिया, bowed to (him), paid respect ; सौम्यतः—
 शोभनं मुखम् इति सुमुखम्, तस्य भावः सौम्यम्, beauty,
 तरमात्, सौम्यतः; the तसिन् प्रथम in सौम्यम् has been
 used in the sense of the Ablative case ; thus सौम्यतः
 means " on account of his beautiful face." छियम्—
 beauty, आशंसिषुः—आ शंस धातु (to praise), लिट् लकार,
 प्रथम पुंस्य, बहुवचन । आयुः—the genitive singular of
 आयुस्, of age, of life. दीर्घ्यम्—दीर्घत्वम्, length; विपुलस्य
 भावः दीर्घ्यम् । आयुः दीर्घ्यम्—उच्च का बहुपत्न, बड़ी उच्च,
 ' agevity of life, length of life, i. e., a long life.
 आशंसिषुः—wished, hoped for.

निरस्त्य नार्यश्च महाकुलेभ्यः

व्यूहाश्च कैरातकवायनानाम् ।

हुङ्गाः कृतेभ्यश्च निवेशनेभ्यो

देवानुयायिध्वजवत्प्रणेषुः ॥ १२ ॥

PROSE ORDER :—नार्यः महाकुलेभ्यः हुङ्गाः कैरातक-
 वायनानां व्यूहाः च कृतेभ्यः निवेशनेभ्यः निरस्त्य देवानुया-
 यिध्वजवत्प्रणेषुः ।

HINDI TRANSLATION :—द्विर्वा बड़े बड़े कुलों से तथा कुबड़े
 और कैरातों और वीनों के समूह (अपने) छोटे छोटे घरों
 से निकल कर देवनाथों का अनुसरण करने वाली ध्वज
 के समान (उन्हें) प्रणाम करते थे ।

part of the country by the invaders. They appear to have been of service to the new-comers as watchmen and guards. धामन—धौना, a dwarf, a pigmy. कैरातकाद्य नामनाद्य इति कैरातकधामनाः (द्रव्य), तेषाम्, गरीब किरातों गौर धौनों के, of poor foresters and dwarfs, घ्यूदाः—रमुदाः, crows. कृतेभ्यः—स्वल्पेभ्यः, सूक्ष्मेभ्यः, small, poor ; नेत्रेदानेभ्यः—गृहेभ्यः, from houses ; निस्सुराय—बहिरागत्य, गहर निकलकर, having come out, निम् + सु + ह्यप् । देवाः पुष्यापिष्यञ्जवन्—देवानुयायिनः ष्यञाः इति देवानुयायिष्यञाः प्रवन् इति देवानुयायिष्यञवन्, देवताओं के अनुसरण करने वाले ङञ, banner-cloths of the gods, प्रीमुः—प्रणाम करते से, bowed. The meaning is thus यथा देवानुयायिनः ष्यञाः शयुना नमति तद्वन् तं गौरमं नमतिव्य, जिस प्रकार देवताओं से अनुसरण करने वाली ष्यञाएँ वायु से झुक जाती हैं, उसी प्रकार तमाम प्रजाओं ने गौरम को नमस्कार किया ।

ततः कुमारः खलु गच्छतीति

भ्रुत्वा सिन्धुयः स्य्यञनात्प्रवृत्तिम् ।

दिरक्षया इर्ष्यतमानि जग्मुः

जनेन मान्येन कृताभ्यनुज्ञाः ॥ १३ ॥

PROSE ORDER :—ततः कुमारः गच्छति खलु इति स्य्यञनात् प्रवृत्तिम् भ्रुत्वा मान्येन जनेन कृताभ्यनुज्ञाः सिन्धुयः दिरक्षया इर्ष्यतमानि जग्मुः ।

HINDI TRANSLATION :—तब जोहरी ने यह समाचार सुनकर कि राजकुमार निश्चय ही जा रहे हैं वे सिन्धुयों के वहाँ से जाने की इच्छा से अपने बड़ों की आज्ञा से कोटो पर यह दर्श ।



NOTES.

म्रस्तकांचोगुणविघ्ननाः—म्रस्त means slipped & खिसका हुआ। कांची-मेखला, करधनी, girdle; गुण—string; विघ्ननाः—impeded, hindered, कांचीनां गुणाः कांची-गुणाः (य० त०), करधनी के डारे, strings of girdle-strings which slipped down. म्रस्तकांचोगुणाः इति म्रस्तकांचोगुणाः (कर्मधारय खिसके हुए करधनी के डारे, girdle-strings which slipped down. म्रस्तकांचोगुणैः विघ्ननाः (तृतीया तत्पुरुष खिसके हुए करधनी के डारों के कारण दृक्पाट डाली। impeded on account of the girdle-strings which slipped down. सुप्तप्रबुद्धाकुललोचनाः—सुप्तम् meal... sleep, नींद; प्रबुद्ध—प्र+√बुध्+क्त, जगी हुई, awakened आकुल—आकुल दुःखित, distressed; लोचन—नेत्र, ६. सुप्तात् प्रबुद्धानि इति सुप्तप्रबुद्धानि (पंचमी तत्पुरुष), जगी हुई, awakened from sleep. सुप्तप्रबुद्धानि आकुलानि लोचनानि यामां ताः सुप्तप्रबुद्धाकुललोचनाः (षोडि), जिनकी आंखें नींद से जगी होने के कारण दुखी थीं, whose eyes were paining (aching) on account being awakened from sleep. कौतूहलेन—असुकरे उत्सुकता से, with curiosity, कुतूहलम् एव स्वार्थेऽण्। भृताः—पूर्याः, मरी हुई, filled, √भृ+क्त। विन्यस्तविभूषणाः—वृत्तान्त means समाचार, news. कुं राजपयेन गच्छति इति समाचारश्रवणेन। विन्यस्त—विन्यस्त, उल्टा पुल्टा पहिना हुआ, wrongly worn; गहना, ornaments, वृत्तान्तेन विन्यस्तानि (विरुद्धं विभूषणानि यामिः ताः, (षडुद्योहि), समाचार सुनते जिन्होंने उल्टा पुल्टा गहना पहिन लिया था वे स्त्रियां,

NOTES.

प्रासादमोषानतजप्रणादैः—प्रासाद, mansion, हो
 मोषान, मोढ़ी, flight of steps ; तज-पैर का तलुवा, sole
 the feet ; प्रणाद—, नाद, ध्वनि sound. प्रासादानां मोषण
 इति प्रासादमोषानानि (पठ्ठी तपुह्य), तजानां प्रणादाः ।
 तजप्रणादाः (पठ्ठी तपुह्य), तलुवा की ध्वनि, sound
 produced by the soles of the feet ; प्रासादमोषानेषु तजप
 इति प्रासादमोषानतजप्रणादाः. तैः (सप्तमी तपुह्य),
 की मोढ़ियों पर पैर के तलुवों से पैदा हुई ध्वनियों से, ज
 कोटा की मोढ़ियों पर अरने पैर के तलुवों से ध्वनि पैदा
 हुई वे श्रिया गई, with sounds produced by the
 their feet on the flights of steps, i. e. when
 placed their feet on the flight of steps, a sound
 produced Thus they went up making sound on
 flight of steps कांशारथैः—कांशी means मेलना, कर
 गले, रथ means शब्द, आवाज, jingling, तज
 कांशानां रथाः तैः (पठ्ठी तपुह्य), करधनी का आवा
 आवाज करधनी से आवाज पैदा करती हुई, with the
 of their girdles, i. e. when they ascended the
 of steps of the mansions, their girdles, i. e.
 produced Thus they went up making
 by their girdles नृपुरनिस्थिनैः—नृपुर, पापतेव, पै
 मरना का निस्थिन—शब्द, ध्वनि, sound
 निस्थिनानां तैः (पठ्ठी तपुह्य) पापतेव की आवाज से अर्था
 वे ऊपर चढ़ रही थीं ता इनका पापतेव का गुणध्वनि से
 निकलती था, i. e. the sound of their girdles
 as they ascended the flight

रदाः प्रयुक्तानि प्राग्भवानि विभूतयानि द्विगं निगूढमाना
(सर्गो) तर्हि निवृत्ताः, त्वयम् न ययी ।

INDIA TRANSLATION :—बन्दी बन्दी खत्रने में समर्थ होने पर भी, एक खा ले एकान्त में पढ़िने दूर अपने समझनाते गदनों को लज्जा के मारे दिये जा दुई, अपनी आज रोक ही और वह बन्दी बन्दी न गई ।

ENGLISH TRANSLATION :—Another woman, concealing through bashfulness her copious ornaments which she had put on in privacy, controlled her speech, and did not go quickly, in spite of her ability to go hastily.

REPORT IN SANSKRIT :—रका खो शीघ्रगमने समर्थ आसीत्। परन्तु स्वविभूतयानि तथा एकान्ते पृथग्न आसन्। अतः तानि लज्जा गन्धादयो शोभं न ययी । इयमे दाम्ने रता इति लोकेः मा अज्ञाति अतः रतिहास्युपयुक्तानि निगूढनाथम् उच्यता अतः समर्थाऽपि शोभं नागच्छत् ।

METRE :—उपजाति ।

NOTES.

रदाः—एकान्ते, in a secret place, in private. प्रयुक्तानि—
द्वयानि, put on, पढ़िने दूर। प्राग्भवानि—दोतरनि, महानि,
इत्यमनाते दूर, brilliantly shining; conspicuous, remark-
able, or big. द्विगं—त्रयगं, on account of shyness, or
usefulness. निगूढमाना—संयुक्तमाना, दिये जा दुई, concealing.
तर्हि निवृत्ताः—अपनी आज रोक खा, checked her gait,
restrained her speech. त्वयम्—नांघर, खरया, in haste,
quickly. न ययी—नहीं गई, did not go.

परस्परोत्पीडनविद्विषानाम्
संपर्दमंगोभितकुंडयानाम् ।

तामां तदा मस्यनभूयानां
यानायनेष्वनगमो बभूव ॥ १८

PROSE ORDER :— परस्परोत्पीडनविद्विषानाम् संपर्दमंगो
कुंडयानां मस्यनभूयानां तामां तदा यानायनेषु अन्व
बभूव ।

HINDI TRANSLATION :—वेसा मात्रम पहना या माने
स्त्रियां एक दूसरे के ऊपर टेंग की टेंग दबाकर रह
गई हैं। उनके कुंडल माड़ में भी सुजोमित हो पं
झोर उनके गहने बज रहे थे। वेसां अदृश्या में,
स्त्रियों में, खिड़कियों पर, (एक प्रकार की) बेनीनी (लं
हो गईं ।

ENGLISH TRANSLATION :—Then, at the windows the
was a sort of disorder among the ladies who b
(as it were) heaped themselves by pressing
one another, whose ear-rings appeared beauti
(even in) the crowd, and whose ornaments pr
duced a tinkling sound.

PURPORT IN SANSKRIT :—इत्थं प्रतिमाति स्म यत् ताः स्त्रिया
परस्परस्य उपरि राशीकृत्य स्थापिताः सन्ति । तन्
कर्या-कुंडलानि तस्मिन् महति जनसमूहेऽपि श्रुत्यन्ति
आभूयानि च तामां स्वनमकुर्वन् । एतादृशि दृश्ये
कुमारविद्वत्तया सर्वाः गवाक्षेषु सममेव
अतः संपर्दजम्बः ऊष्मातिरेको बभूव ।

METRE :—उपजाति ।

विनिःसृतानि स्त्रीणां मुखपंकजानि तु हर्म्येषु
पंकजानि इव विरेजुः ।

HINDI TRANSLATION :—खिड़कियों में से निकले स्त्रियों के कमलसमान मुँह जिनके कुंडल (कणभूषण) एक दूसरे के ऊपर रखे हुए थे, महलों में बिरेजे कमलों के समान सुशोभित हो रहे थे ।

ENGLISH TRANSLATION :—Women's lotus-like faces peeping out of the windows, with their earrings supported on one another, glowed like lotus stuck on the palaces.

PURPORT IN SANSKRIT :—गथाक्षेपूपविष्टाः स्त्रियः मुखारविन्दानि बाहः निस्सार्य विरेजन्ति स्म । स्त्रीणां कणभूषणानि परस्परं स्यापितानि इव दृष्टांगिरे । तदानीं तामां मुख इत्यं प्रतिमान्ति स्म यथा प्रामादानां वातायनेषु कमलप्रकटानि ।

METRE :—उपजाति ।

NOTES

परस्परं स्यापितानि—परस्परं उपाधितानि (supported, held) कुंडलानि येषां तानि मुखपंकजानि (कणभूषणानि) मुखपङ्कज (कमल सरीसृप मुँह) जिनके कुंडल एक दूसरे के ऊपर रखे हुए थे, lotus-like faces whose earrings were supported on one another. वातायनेभ्यः विनिःसृतानि - खिड़कियों से निकले हुए, issuing out; वि + निःसृ + क्त । मुखपंकजानि—मुखानि पंकजानि, इव (उपजाति कावद् कर्मधारय), कमल सरीसृप मुँह, lotus-like faces

अन्योन्यगंडापिनकुण्डलानि—गंड, कपोल, cheeks; अर्पित
 रथत्वा हुआ, placed, set upon; कुण्डल—कर्णभूषण, ear
 rings. अन्योन्यानां गण्डाः इति अन्योन्यगंडाः. तेषु अर्पितां
 (निहितानि) कुण्डलानि (कर्णभूषणानि) येषां मुखानां तां
 मुखानि, वे मुँह तिनके कर्णभूषण एक दूसरे के गान पर रक्
 हुए थे, the faces which had their ear-rings placed upon
 one another's cheeks. प्रसदोत्तमानाम् :—प्रसदाः (स्त्रिय
 तामु उत्तमाः (श्रेष्ठाः) स्त्रियों में श्रेष्ठ, स्त्रियों में जा उल्
 यो अर्पान् उत्तम स्त्रियों, of handsome ladies, of love)
 (comely) women-वद्धाः—एधे हुए, मिले हुए, united
 combined. कलापः—समूह, group, a collection, a band

तस्मिन् कुमार पथि वीक्षमाणाः

स्त्रियो बभुर्गामिव गन्तुकामाः ।

ऊर्ध्वोन्मुख्याश्चैनमुदीक्षमाणा

नरा बभुर्गामिव गन्तुकामाः ॥ २२ ॥

PROSE ORDER : तस्मिन् पथि कुमारं वीक्षमाणाः स्त्रिय
 तां गन्तुकामाः इव बभुः । एतम् ऊर्ध्वोन्मुखाः उदीक्षमाणा
 नरा एव गन्तुकामाः इव बभुः ।

HINDI TRANSLATION :—इस मार्ग में, (जाने हुए) कुमार
 को देखना हुए स्त्रियों पृथक् पर जाने की इच्छुक सी (स्त्रियों
 पड़नी सी, उम (कुमार) का ऊपर मुँह करके देखने हुए
 पुरुष आकाश को जाने के इच्छुक से मान्य पड़ने से । (स्त्रियों
 स्त्रियों इतना उन्मुखता से गर्दन निचाने निचाने देन
 सी माना व प्रजन पर आता व हनी सी, और पुरुष
 तरह मुँह ऊपर दिख, राजकुमार का देख रहे थे, मार्ग
 पड़े बनकर आकाश पर चढ़ जाता था; देने से) ।

ENGLISH TRANSLATION :—The ladies, looking at the prince on the road, seemed to be desirous of descending on the earth; while the men, looking at him with their faces turned upwards, seemed to be eager to ascend the heaven.

REPORT IN SANSKRIT :—मार्गे गच्छन्तं कुमारं विन्वांकयन्त्यः
स्त्रियः पृथिवीम् आगतुमिच्छन्तीति प्रनीयते स्म । मुखाणि
ऊर्ध्वं कृत्वा ते नराः कुमारं पश्यन्ति स्म, ते आकाशं गन्तु-
मिच्छन्तीति प्रतिमाति स्म ।

METRE :—उपजाति ।

NOTIS.

उदीक्षमाणाः—वि + ईक्ष + ज्ञानच् . qualifying स्त्रियः । नाम्
नियोगम्, to the earth. गच्छुः कामः—ज्ञाने का इच्छुक,
desirous of going (towards the earth); de-irous
descending (on the earth) । " तुं काममजसागपि "
। से तुम् प्रायय के ' म् ' का जोष दा गया । एनम्—
नराः), looking at. चाम्—आकाशम्, heaven. " यो "
ज शब्द है—रूप धत्तेया—योः यत्नो यानः । चाम् चावी
तः । याना अभ्याम् पुमिः—इतिदि । ' चाम् ' द्वितीया
त एक वचन है ।

दृष्ट्वा च तं राजसुतं स्त्रियस्त्रया

जाञ्ज्वल्यमानं वपुषा धिया च ।

धन्यास्य भाव्येति शनैरयोच-

च्छुद्धैर्मनोभिः खलु नान्यभावात् ॥२३॥

लोचन्—अकण्ठयन्, बांछी, said, म् धातु सामान्य भूत,
यम पुण्य, बहुवचन ।

अयं किल व्यायतपीनबाहु

रूपेण साक्षादिव पुष्परेतुः ।

त्यक्त्वा धियं धर्ममुपैष्यतीति

तस्मिन्स्त्रियो गौरवमेव चक्रुः ॥ २४ ॥

'ROSE ORDER :—व्यायतपीनबाहुः, रूपेण साक्षात् पुष्परेतुः
एव अयं धियं त्यक्त्वा धर्मम् उपैष्यति किल इति स्त्रियोः
तस्मिन् गौरवम् एव चक्रुः ।

HINDI TRANSLATION :—लम्बी तथा मोटी भुजाओं वाला
और रूप में साक्षात् कामदेव के समान यद् (राजकुमार)
राजकुमारी को त्यागकर धर्म (वैराग्य) धारण करेगा—
इस बात को सुन कर स्त्रियों ने उनका आदर किया ।

ENGLISH TRANSLATION :—This prince, having long
muscular arms, and resembling Cupid himself in
appearance, will give up royal splendour, and
resort to Dharma (renunciation)—at this report
the women did him honour.

REPORT IN SANSKRIT :—यद् स्त्रियः जनानां मुलेभ्यः
वार्तामश्रयन् यन्, राजकुमारः राजकुमारीं त्यक्त्वा धर्मं
प्रदीष्यति, तद् तासां हृदये तं प्रति मदान् आदरो बभूव
METRE :—उपजाति ।

NOTES.

व्यायतपीनबाहुः—व्यायत, दीर्घ, लम्बे; पीन,
fleshy, muscular; बाहु, भुजा, arm; व्यायती २.

PROSE ORDER :—नाः न स्त्रियः ययुषा स्त्रिया च ज्ञानल
तं राजसुतं दृष्ट्वा " अस्य मायां धन्या " इति युद्धैः मनोभि
मल्लु धन्यमायां अथाचन् ।

HINDI TRANSLATION :—शरीर तथा कान्ति से बनकर
हुए उस राजकुमार को देख कर उन स्त्रियों ने शुद्ध वि
से, न कि किसी दूसरे विचार से, कहा, " इस राजकु
की पत्नी धन्य है । "

ENGLISH TRANSLATION :—Seeing the king's s
shining in body and beauty, those women sa
with pure hearts and with no other feelin
" Blessed is his wife. "

PURPORT IN SANSKRIT :—सुन्दरस्वरूपं जाज्वल्यमानकान्ति
राजकुमारं दृष्ट्वा स्त्रियः शुद्धभावेन अकथयन् " अस्य म
धन्या, यस्या इदृशः सुन्दरः पेश्वर्यमम्पन्नः पतिः " । तन्
कथने द्वेषादिभावो नाभून् ।

METRE :—इन्द्रधजा ।

NOTES.

ययुषा—शरीरेश, शरीर से, by body. स्त्रिया—कान्
कान्ति से, by lustre. जाज्वल्यमानम्—प्रकाशमानम्, देखी
मानम्, चमचमाते हुए (उस राजकुमार को), shining
burning bright राजसुतम्—राज्ञः सुतम् (पट्टी तन्पुरुष
दृष्ट्वा—विज्ञोक्त्य, देखकर, seeing, having seen, दृश+क्त्वा
अस्य—राजकुमारस्य, इस राजकुमार की, of this princ
मायां—पत्नी, wife. धन्या—परम सौभाग्यशती, blesse
extremely fortunate. युद्धैः—पवित्रैः, pure, मनोभिः
अन्तःकरणैः, मन से, चित्त से, विचार से, by heart

तारायं यद् कि उन्नेने समक्ता कि तिम प्रकार मेरा धर्मः
करण अनेक कल्पनायां से भरा हुआ है उसी प्रकार यद्
राजमार्ग अनेक विभिन्न पदार्थों से भरा है ।

ENGLISH TRANSLATION : - Seeing the royal road which
was the first (for him), crowded with educated
citizens dressed in neat sober clothes, the prince
was soon what delighted; but again he thought
all this like the disposition of his own mind.

REPORT IN SANSKRIT :—राजमार्गेण पुर्यं + द्वापि कोऽपि
राजमार्गो न दृष्टः । स्वजीवने न एव राजमार्गः तेन प्रथमं
दृष्टः । तं च मार्गं सुजिज्ञासुः, सधीः, स्वच्छवस्त्राभिरुद्यतेः
नगरनिवासिभिः समाकुलं दृष्टुं तस्य हृदये सख्यमार्गं प्रदर्शयः
समजायत । पान्तु ज्ञानमोक्षं नऽभ्यस्य यन् यथा मम
मनोऽपि सा विविधकलात्मिभिश्चमत्ता तथैवायं मार्गोऽपि
विचयैववरीः पुदरीः श्याप्यते ।

LEURE :—इन्द्रवज्र ।

NOTES.

तत्पूर्वम्—त एव पुर्यं इति तत्पूर्वः, तं, that (road) was
the first road that he had ever seen in his life; i. e.,
before this he had never seen a road, राजपथम्—
also stanza Nos. 5 and 10. राजः पथः इति राजपथः
(यद्वा तत्पूर्वम्) "शुद्धं पुरःशुद्धः पथानामस्ये " शुद्ध से
शुद्धात् पथिन् जशुद्धो " पथ " ही जाता है । शुद्धिपोर
—शुद्धि, पवित्र, उज्ज्वल, स्वच्छ, neat, white, pure.
शुद्ध, sober; वेष्ट or वेज्ज means dress, शुद्धा धीः वेष्टः शुद्धी
शुद्धिपोरवेष्टा, तीः शुद्धिधीःवेष्टीः (बहुमादि) इसका विशेष्य

स व्यायवगीनबाहुः (बह्युः) त्रिमकी मुञ्जार्णं वरु-
 लम्बी घोर मांठी गौं, who had long fleshy arms. कन्द-
 मीश्र्येण, का में, सुन्दरता में, आकृति में, in beauty, is
 appearance. मान्नात्—अप्यत्तम् । पुण्यहेतुः—पुण्यसि हेतु-
 यस्य म (बह्युः) अगान् पुण्य हो त्रिमके अस्त्र गत्र है,
 he who has flowers for his weapons (arrows) ।
 पुण्यधन्वा, कुमुदगर अयांन् कामदेव । श्रियम्—राजजडनो-
 राजसो पेश्य, राजमा टाट वाट, royal splendour. कथा
 विहाय, छोड़ कर, abandoning, leaving, त्यज्+क
 धर्मम्—वैराग्यरूपम्, वैराग्यरुता धर्म को, renunciatio-
 sense of duty. उपैष्यति—उप् + ष् (गती), to take res-
 to, to practise, धारण करेगा, अभ्यास करेगा, लड़ लड़ा
 प्रथम पुण्य, एक धनन । किञ्—इति धार्ता धृता, it is
 reported, धातामभ्य व्यया. कित । गौरवम्—आदर
 respect. चक्रः—किया, did, showed, paid.

कीर्णं तथा राजपर्यं कुमारः

पारैर्विनर्तैः शुचिधीरवैरैः ।

तत्पूर्वमालोक्य जडर्षं किञ्चिन्

मेने पुनर्भावमिवात्मनश्च ॥ २५ ॥

PROSE ORDER :—तथा तत्पूर्वं राजपर्यं शुचिधीरवैरैः विनीतैः
 पौरैः कीर्णम् आलाक्य कुमारः किञ्चिन् जडर्षं पुनः च
 आत्मनः भावम् इव मेने ।

HINDI TRANSLATION :—इवेन तथा गम्भीर धरु धारी
 और सुशिक्षित पुण्यसियों से भरे राजमार्ग को देख कर
 राजकुमार कुछ प्रसन्न हुए, और फिर उन्होंने (उस सारे
 दृश्य को) अपने अन्तःकरण के समान समझा ।

“पौरैः” है; विनीतैः—decent, educated, well trained. वि + नी + क, इसका मा विगोच्य “पौरैः” है। कोर्यन्—समाप्तम् कृ to scatter + क, this is past participle qualif. रात्रयम्, काण्यन्, means “packed, crowd thronged.” आलोक्ष्य—दृष्ट्वा, देख कर, seeing. किञ्चि a little, somewhat; this is an adverb modifying verb “जहर्ष”। भावम्—मनोवृत्तिम् temperam disposition. “आत्मन्” शब्द “चित्त” के अर्थ में प्र दूया है।

पुरं तु तत्स्वर्गपिव महृष्टं

शुद्धाधिवासाः समवेक्ष्य देवाः ।

जीर्णं नरं निर्ममिरे प्रयातुं

संचोदनार्थं क्षितिपात्मजस्य ॥ २६

PROSE ORDER :—शुद्धाधिवासः देवाः तु तत् पुरं स्वर्गं महृष्टं समवेक्ष्य क्षितिपात्मजस्य प्रयातुं संचोदनार्थं जीर्णं निर्ममिरे ।

HINDI TRANSLATION :—परन्तु पवित्र निवासस्थान देवनाथों ने उस नगर का स्वर्ग के समान प्रमत्त देव राजकुमार को खलु जाने की प्रेरणा करने के निमित्त दूबना पवना जलरहित गहिर बाता मनुष्य बनाया ।

ENGLISH TRANSLATION — But the gods, whose places resemble are a real seeing that city exultant in heaven, set, rebul an of man for the purpose including the prime to repair (to the forests)

PURPORT IN SANSKRIT — पवित्रस्थाननिवासितः देवनाथन् कुटुम्बिन नथपरं दृष्ट्वा एकं प्रायं कृतेवरं बुद्धमवाप ।

गता उपधा, सञ्जाता, आ गां, पैदा हो गई, arisen, born, caused. आस्था—अभिजाय or रुचि or औत्सुक्य care, ought, consideration, curiosity. आगता आस्था यस्य स गतास्यः (बहुव्रीहि), जिसके (पुंल) रुचि पैदा हो गई थी, so had some interest created in him with regard to knowing something about that man. निष्कंपनिविष्टदृष्टिः—नास्ति कम्पः (motion) यस्मिन् कर्मणि तत् यथा स्यात्—या, इति निष्कम्पम् (अथययीभाव) निश्चल ढंग से, motionlessly, intently. निविष्टा—बद्धा, fixed, निष्कम्पं निविष्टा येः यस्य सः (बहुव्रीहि), whose eyes were fixed motionally on the man, जिसकी आंख बिरकुल निश्चल तरीके से । पुण्य को घोर गड़ो हुई थी । संप्रादकम्—सारथिम्, kari teer. तत्र एष—यत्र स वृद्धः आसीत् तत्रैव, जहाँ वह बूढ़ा । वहीं ।

क एष भोः सूत नरोऽभ्युपेतः

केतैःसितैर्यष्टिविपक्तहस्तः ।

भ्रूसंवृताक्षः शिथिलानतांगः

किं विक्रियैषा प्रकृतिर्यदृच्छा ॥ २८ ॥

USE ORDER :—भोः सूत मिनैः केतैः (युक्तः), यष्टिविपक्तहस्तः, भ्रूसंवृताक्षः शिथिलानतांगः एषः कः नरः अभ्युपेतः । एषा किं विक्रिया, अथवा प्रकृतिः (अथवा) यदृच्छा ।

INDI TRANSLATION :—ये सारथि, सफेद बालों से युक्त, और बड़ी पर हाथ टेके हुए वह कौन आदमी आया है जिसकी आंखें भौंहों से ज़िपी हैं और जिसके हांग ढीले पड़ कर झुक गए हैं । क्या यह परिवर्तन हो गया है, या प्राकृतिक है या केवल आकस्मिक है ।

PURPORT IN SANSKRIT:—कुमारेण यः प्रथमः मारुचिर्वादि,
तस्य उत्तरं कुमारात् गोपनीयमामीत् । तथापि स तन्
प्रकृतवान्, कुमाराय निवेदितवान् इत्यर्थः, यः त्रे
चिन्तितं यत् तथाकर्मणे न कारि हानिः दोषो वा । अथ
ते एव देवाः तस्य बुद्धौ मादमुदयादयन् यैः जोषः
निरमायि ।

METRE :—उपजाति ।

NOTES.

रथप्रयोगा—सारथिः । कृतबुद्धिमोहः—बुद्धि, intellect, brain
mind; बुध् + क्तिन् । मोहः, stupefaction, bewildering
मुह् + घञ् । बुद्धेः मोहः बुद्धिमोहः (पठो तत्पुरुष), कृतः कु
मोहः यस्य स कृतबुद्धिमोहः (बहु०) qualifying रथप्रवे
त्तेः एव देवैः कृतबुद्धिमोहः, जिमकी बुद्धि उन्नीं देवतामोह
चकरा दी गई थी । अदोषदर्शी—दोष पश्यति इति दोषदर्शी
दोषदर्शी इति अदोषदर्शी, जिमको कोई दोष नहीं दिखाई दे
या, अर्थात् जो यह सोचता था कि कुमार से सारी बात बत
दने में कोई हानि नहीं है, who saw no harm in revealing
the matter to the prince. संरक्ष्यम्—गोपनीयम्, fit to have
been kept secret अर्थम् तन्मम्, affair, matter. नृराजस्य
—नृपस्य आत्मजः (पुत्रः) तन्मै (पठो तत्पुरुष), to the
prince, निवेदयामास—कथयामास related, revealed.

रूपस्य हवीं व्यसनं बलस्य

शोकस्य योनिर्निधनं रतीनाम् ।

नाशः स्मृतीनाम् रिपुरिन्द्रियाणा-

मेवा जरा नाम ययैष भग्नः ॥ ३०

tion. स्मृतीनाम्—स्मरणजन्यैः, of memory. स्मृ+
 माजः—destruction, annihilation. नञ्+घञ्। एष
 नाम—एष निश्चय ही वृद्धावस्था है, this is, of old
 old age. यथा—निम्नके द्वारा, by which, मत्तः—अनिद
 तांष्ट्रिया गया है, has been broken. मत्त्+त्, F
 participle.

पीतं क्षणेनापि पयः शिशुन्वे,
 कालेन भूयः परिमृष्टमुर्व्याम् ।
 क्रमेण भूत्वा च युवा वपुष्मान्
 क्रमेण तेनैव जरामुपेतः ॥ ३१ ॥

PROSE ORDER :—अनेन शिशुन्वे पयः यपि पीतम् । द्वि काले
 उर्व्याम् भूयः परिमृष्टम् : क्रमेण च वपुष्मान् युवा भूत्वा, हे
 एष क्रमेण जराम् उपेतः ।

HINDI TRANSLATION :—इस पुद्गल द्वारा बाल्यावस्था में दू
 भी पिया गया था; फिर समय पाकर पृथ्वी पर रेंगा य
 था । धीरे-धीरे सुन्दर शरीर धाला युवा होकर उसी क्रम से
 वृद्धावस्था को प्राप्त हुआ है ।

ENGLISH TRANSLATION —By this man, in his child-
 hood, was milk also drunk, then, in course of
 time, he crawled on the ground : and having
 gradually grown into a youth with a beautiful
 form, he has, in the same order, attained to old
 age.

PURPORT IN SANSKRIT:—यथा सर्वे नराः बाल्ये मातृस्तनक्षीरं
 पिवन्ति तथैव अयमपि बाल्ये मातृस्तनक्षीरं पीतवान् ।
 तदनन्तरमनेन पृथिव्याम् पदुष्यां रिंगामां कृतम् । गच्छन्

HINDI TRANSLATION :—इस प्रकार कहे जाने पर चौक उम राजकुमार ने सारथि से कुछ बेसी बात कही, " यह दोष मुझे भी होगा ?" तब सारथि ने उनसे कहा।

ENGLISH TRANSLATION :—Being thus told, the prince startlingly said something like this to the charioteer: " Will this misery befall me too ?" Then the charioteer said to him.

PURPORT IN SANSKRIT :—यदा सारथिः कुमाराय एतन् निवेद्यामास तदा कुमारः किञ्चिद् आश्चर्यवक्तो नूनं सारथिमुवाच, " किम्, एषा जराकृपा विपत्तिः मया भ्राममिष्यति " । एतन् श्रुत्वा सारथिः प्रत्यवदत् ।

METRE :—उपजाति ।

NOTES.

चलितः—कम्पितः, चौक पड़ा हुआ, startled, चञ्चल
सूतम्—सारथिम्, सारथि से, to the charioteer. वसति-
कथयामास, कहा, said, भाष् घातु, लिट् लकार, प्रथमपुरुष,
वचन । किम्—क्या, प्रश्नवाचक क्रियाविशेषण अन्वय । दोष-
विकारः evil, defect, misery.

आयुष्मतोऽप्येव वयोऽपकर्षो

निःसंगमं कालवशेन भावी ।

एवं जरां रूपविनाशयित्रीं

जानाति चैवेच्छति चैव लोकः ॥ ३३ ॥

PROSE ORDER :—आयुष्मतः (भवतः) अयि एव वयोऽपकर्षं
कालवशेन निःसंगमं भावी । एवम् एवः लोकः रूपविनाशयित्रीं
जरां जानाति इच्छति एव च ।

PURPORT IN SANSKRIT :—यद्यपि जनाः प्रत्यक्षं पश्यन्ति वृद्धावस्थया स्मरणशक्तिः क्षीयते, सौन्दर्यं नश्यति, तथापि क्षीणं भवति, तथापि ते नैव व्याकुलतां प्रदर्शयन्ति ।

METRE :—उपजाति ।

NOTES.

निर्विशेषम्—Adverb modifying the verb “हन्ति” निर्गतः विशेषः (distinction) यस्मिन् कर्मणि तत् यथा स्यात् तथा (अव्ययीभाव), without distinction, indiscriminately. हन्ति—destroys, mars, ruins, injures. ईदृशम्—ईदृशीं व्यवस्थाम्, such a state of affairs. प्रत्यक्षतः—साक्षात् पुरतः ; अक्षयोः प्रति प्रत्यक्षम्, तस्मात् प्रत्यक्षतः, before the eyes, ईक्षमाणः—पश्यन्, देवतां दृष्ट्वा, seeing, ईत् + शानच्-qualifying “लोकः ।” लोकः—नरः, जनः, world, people. “लोकस्तु भुवने जने” इत्यमरः । उद्वेगम्—agitation, alarm, fear, anxiety, sorrow (Apte's Dictionary) न उपैति—न प्राप्नोति, न अनुभवति, नर्ही मालूम करतः does not feel.

एवं गते मृत निवर्तयाद्भान्

शीघ्रं गृहाण्येव भवान्भयात् ।

उद्यानभूमौ हि कृतो रतिर्मे

जराभवे चेतसि वर्तमाने ॥ ३७ ॥

PROSE ORDER :—हे मृत, एवं गते मति, अश्नान् निवर्तमानान् शीघ्रम् एव गृहाण्येव भवान्भयात् । हि जराभवे चेत वर्तमाने (मति) कृतः मे उद्यानभूमौ रतिः ।

उद्यानभूमौ (पच्छी तत्पुरुष), वगीचे में, in the garden
कुतः—कहाँ से, whence; किम् + नसिच् । रतिः—आनन्द
प्रेम, fondness, pleasure, enjoyment.

अथाज्ञया भर्तृसुतस्य तस्य
निवर्तयामास रथं नियन्ता ।

ततः कुमारो भवनं तदेव

चिन्तावशः शून्यमिव प्रपेदे ॥ ३८ ॥

PROSE ORDER :—अथ भर्तृसुतस्य तस्य आज्ञया नियन्ता रथं
निवर्तयामास । ततः चिन्तावशः कुमारः तदेव भवनं शून्यमिव
प्रपेदे ।

HINDI TRANSLATION :—स्वामी के पुत्र की आज्ञा से सारथि
ने रथ को लौटा दिया । तब चिन्तामग्न राजकुमार उसी
घर-में मकान में गए ।

ENGLISH TRANSLATION :—Then, by the order of his
master's son, the charioteer turned back the
chariot; and the prince, absorbed in anxiety,
entered the self-same house, as if it were vacant.

PURPORT IN SANSKRIT :—राजकुमारस्य आज्ञां प्राप्य सारथिः
रथं राज-नगरं प्रति निवर्तयामास । चिन्तामग्नमानसो र
कुमारश्चस्मिन्नेव भवने प्राविशत् यस्मिन् पूर्वं क्रीडतिर
स्वकीयान्तःकरणस्य उद्विग्नत्वात् सकलैश्वर्यसम्पन्नं
तद्गृहं शून्यमिवापश्यत् कुमारः ।

METRE :—इषजाति ।

NOTES.

भर्तृसुतस्य—भर्तृ, स्वामी, master, सुत-पुत्र, son, भर्तुः पु
भर्तृसुतः तस्य भर्तृसुतस्य (पच्छी तत्पुरुष समास), स्वामी

राजा की आज्ञा पाकर फिर उसी क्रम में (पहिले क्रम बाहर चले गए ।

ENGLISH TRANSLATION — When, (continuously)
flirting about old age, he found no pleasure to
(in the palace), he went out again in the
order with the permission of the king.

PURPORT IN SANSKRIT:—निरगन्तं ज्ञरामेव ध्यायन् राजकु-
श्रित्नामग्रां वभूव, अतस्त्वस्मिन् भवने सुखं नात्यमा-
अस्मान्कारयान् पितुराज्ञया स पुनरपि तेनैव विधिना
निरगच्छन् येन विधिना पूर्व गत आसीत् ।

METRE :—उपेन्द्रयज्ञा ।

NOTES.

जरा जरा—this repetition shows continuity in the
meditation of the prince. प्रपरोक्षमाणः—चिन्तयन्, सोच-
हुए, ध्यान करते हुए, meditating, pondering over, reflect-
ing ; present participle, qualifying कुमारः; प्र+परि-
इत्+जानच् । शर्म—सुखम्, happiness, pleasure. शर्म-
मूलशब्द है (नपुंसकलिङ्ग) शर्म शर्मणां शर्माणि इत्यादि
चलेंगे । लेभे—पाया, found, got, लभ् धातु आरम्भे पदी, जि-
जकार, प्रथम पुरुष एक वचन । नरेन्द्रानुमतः—नराणाम् एव
(स्वामी) इति नरेन्द्रः (पृष्ठी तत्पुरुष) अर्थात् राजा, lord of
men, i. e., the king. नरेन्द्रेण अनुमतः (आज्ञप्तः) इति नरेन्द्र-
नुमतः (तृतीया तत्पुरुष), राजा (शुद्धोद्ग) से आज्ञा पाकर
being permitted by the king. अनुमतः—अनु+मन्+क-
भूयः—पुनः, again (indeclinable अव्यय), modifying the
verb ' जगाम ।' तेन एव क्रमेण—येन क्रमेण (विधिना)

drooping ; अंस, स्कन्ध, shoulder ; बाहु—भुज, arm. अंसौ बाहु च यस्य सः (बहुव्रीहि), जिसके कन्धे और भुजा झुकी हुई हों, whose shoulders and arms are drooping. कृशपाण्डुगात्रः—कृश, लीण, lean, thin ; पाण्डु, पीत, पील pale ; गात्र—शरीराधयव, अंग, limbs, कृशं, पाण्डु च ग यस्य सः कृशपाण्डुगात्रः (बहुव्रीहि), जिसका शरीर दुबल पतला तथा पीला पड़ गया हो, whose body (limbs) has become emaciated and pale. परम्—अन्यम् पुरुषम्, दूसरे पुरुष को, another person. समाश्लिष्य—आश्लिष्य, गंजनाकर, embracing, सम्+आ+श्लिप्+व्यप् । अम्भ—मातः । “ अम्भ ” “ अम्भ्या ” शब्द का सम्बोधन है । कल्याण-दिज्ञ पिथजाने धालो, pathetic, pitiable. वाचम्—वाणीम् speech. वाक् वाचौ वाचः, वाचम् वाचौ वाचः, वाचा वाग्म्याम वाग्भिः, इत्यादि ।

ततोऽब्रवीत् सारथिरस्य सौम्य

धातुप्रकोपप्रभवः प्रवृद्धः ।

रोगाभिधानः सुमहाननर्थः

शक्रोपि येनैव कृतोऽस्वतन्त्रः ॥ ४२ ॥

PROSE ORDER :—ततः सारथिः अब्रवीत्—सौम्य, अस्य धातु-प्रकोपप्रभवः प्रवृद्धः एवः रोगाभिधानः सुमहान् अनर्थः, येन शक्रः अपि अस्वतन्त्रः कृतः ।

TRANSLATION :—तब सारथि ने कहा, “ ये प्यारे, सका यह रोगनामक बड़ा दृष्टा महान् अनर्थ बात पिथ और कल्याण के उमड़ने ने ऐसा दृष्टा है, जिससे इन्द्र भी स्वतन्त्र (मुक्त) नहीं है ।



और बीमारियों में व्याकुल होते हुए भी लोग आनन्द प्राप्त करते हैं ।

ENGLISH TRANSLATION :—Then the charioteer said :—
"O Prince, this defect is universal. In spite of being afflicted with diseases in this manner, and suffering from ailments, people find pleasure."

PURPORT IN SANSKRIT:—सारथिः प्रत्यवदन्—हे कुमार, एष विषयः साधारणतया सर्वान् बाधते । यद्यपि जनाः इत्यं रोगैः पीडयन्ते, तथापि ते सुखमनुभवन्ति ।

METRE :—उपजाति ।

NOTES.

रथप्रणेता—सारथिः. प्रकरंणं नयति असौ इति प्रणेता, रथरथ प्रणेता इति रथप्रणेता (पश्टी तत्पुदय), साधारणः—common, universal, general. परिपीडयमान—दुःखम् लभमानः, परि+पीड्—कर्मणि जानच्, अर्थान् कर्मवान्च में जानच्, दत्तातुरः—दत्तु मन्त्रि रोग, १००, र्थानिग, दत्तु दत्तौ दत्तः, दत्तम् दत्तौ दत्तः, दत्ता दत्तयाम् दत्तिम्. इत्यादि रूप हाते हैं । घातुर, suffering from, दत्तिम्. घातुर इति दत्तातुरः (तृतीया तत्पुदय) । दत्तम् उपैति—आनन्दम् अनुभवति, सुखम् लभते, मुदं प्राप्नोति, सुखपाना हे आनन्द प्राप्त करता हे । pleasure

इति धुतार्यः स विपण्यचेताः

सावेपताश्चिंतनः शशीर ।

इदं तु वाच्यं करुणाञ्चितः सन्

मोराय किञ्चिन्मुदना स्वयं

PROSE ORDER :—इति धृतार्थः विषयव्यवेताः स चम्बुर्मिगतः
गगनी इव प्रावेपत । किञ्चित् कदम्बाग्भितः सन् मृदुना स्वरेण
इदं वाक्यं प्रावाच ।

HINDI TRANSLATION :—यह सब वृत्तान्त सुनकर राजकुमार
उदासचित्त होकर, जल की लहर में प्रतिबिम्बित चन्द्रमा के
समान काँप उठे, और कुछ कदम्बा से भर कर कोमल स्वर
से यह वाक्य बोले ।

ENGLISH TRANSLATION :—The prince who got dejected
at heart on hearing this account trembled like the
moon, reflected in the waves of water, and, being
somewhat moved with pity, spoke the following
words in a gentle tone.

PARAPHRASE IN SANSKRIT :—उपरिर्णतं वृत्तान्तं श्रुत्वा कुमारस्य
चेतः खिन्नजातम् । अथ च स तथाऽकम्पनं यथा जलाशयस्य
तरंगेषु पतितं चन्द्रप्रतिबिम्बं कम्पते । अनन्तरं दयाशी भूत्वा
कोमलस्वरेण इदमवोचत् ।

METRE :—उपजाति ।

NOTES.

इति—उपरिर्णत, ऊपरवर्णन किया हुआ, mentioned
above, described above. धृतार्थः—अर्थ means account
वृत्तान्त । धृत—सुना हुआ, heard, श्रुत्वा+क्तः धृतः अर्थः
येन स धृतार्थः (यद्दुमीदि), जिससे वृत्तान्त सुना जा चुका
था, by whom the account was heard, i. e., who had
heard the account. विषयव्यवेताः—विषयव्यवेता means “ dejected,
sad.” चेतस्, मनः, हृदयम्, विषयव्यवेताः यस्य स विषयव्यवेताः
(यद्दुमीदि), इसका विशेष्य “ स कुमारः ” है, इसका

घोर बीमारियों से व्याकुल होते हुए भी लोग आनन्द प्राप्त करते हैं ।

ENGLISH TRANSLATION :—Then the charioteer said :—“O Prince, this defect is universal. In spite of being afflicted with diseases in this manner, and suffering from ailments, people find pleasure.”

PURPORT IN SANSKRIT—मारुतिः प्रथमम्—हे कुमार, वयं विपद्मन्माधारणतया मर्त्यान् बाधते । यद्यपि जनाः इत्थं रोगैर्भीक्ष्ण्यन्ते, तथापि ते सुखमनुभवन्ति ।

MEANING :—उपजाति ।

NOTES.

व्यवर्तिता—मारुतिः प्रकर्षणं लयति काशी इति प्रयोगा, व्यस्य प्रयोगा इति व्यवर्तिता (पञ्चमी लानुदय), माधारण—common, universal, general परिपीड्यमान—दुःखम् स्वममानः, परिपीड्य—कर्मणि शान्त्, काशीन् कर्मभावय मे शान्त्, कर्त्तानुरः—कर्मकर्त्ता शान्, disease, मर्त्यान्, कर्म कर्त्ता कर्त्ता, कर्म कर्त्ता कर्म, कर्त्ता कर्म्याम् कर्मिन्, इत्यादि रूप होते हैं । कानुर, कर्मकर्त्ता कर्मिन्, कर्मिन्, कानुरः इति कर्त्तानुरः (मूर्त्तिया लानुदय) । इत्थं इति—आनन्दम् अनुभवन्ति, सुखम् लभन्ते, मूर्त्तानुरिन्, सुख्यन्ता हे आनन्द प्राप्त करना हे, derives pleasure

इति धुनार्थः स विपत्तयभेदाः

मारुतनाम्निगमः कर्त्तव्यः ।

इत्थं नु काश्चिद्व्यग्यान्वितः मन

मोहात् विद्विन्मुदुता इत्येव ॥ ४९ ॥



अर्थ है " जिसका चित्त खिन्न हो गया था, whose heart become dejected ", रूप चलंगे:—विपयणचेताः विपयणचेतसः, विपयणचेतसम् विपयणचेतसौ विपयणचेतसा विपयणचेताभ्याम् विपयणचेतोभिः इत्यादि।
 अम्बुर्मिगतः—अम्बु means " जल, water ", अम्बु अम्बुनि, अम्बु अम्बुनी अम्बुनि, इत्यादि रूप चलंगे। ऊर्मितरंग, लहर, wave, अम्बुनां (जलानां) ऊर्मयः इति अम्बुर्मिगतः (पण्डो तत्पुरुष), तासु गतः इति अम्बुर्मिगतः (सप्तमी तत्पुरुष) इसका विशेष्य " गगी " है, जल की लहरों में प्रतिबिम्बित reflected in the waves of water. प्रावेपत—अकम्पत, उठा। क्लिञ्चिन् करुणान्वितः—करुणा, दया, pity, compassion mercy, अन्वितः, युक्तः, filled with, करुणया (दया) अन्वितः इति करुणान्वितः (तृतीया तत्पुरुष), being filled with pity, being moved with pity. मृदुना—कोमलतया delicate, soft, gentle. स्वरेण—स्वनिना, tone.

इदं च रोगव्यसनं प्रजानां

पर्यरच विश्रम्भमुपैति लोकः ।

विस्तीर्णविज्ञानमहो नराणां

हसन्ति यद्रोगमयैरमुक्ताः ॥ ४६ ॥

PROSE ORDER:—प्रजानाम् इदं रोगव्यसनं पर्यन् लोकं विश्रम्भम् उपैति । यन् रोगमयैः अमुक्ताः अपि हसन्ति (अतः) नराणाम् विस्तीर्णविज्ञानम् अहो ।

INDI TRANSLATION:—लोगों (मनुष्यमात्र) के इस रोग वरी संकट को देखने पर भी नगर विश्राम कर रहा है। यदि रोग के भय से मुक्त न होने पर भी लोग हँसने हैं।

अर्थ है " जिसका चित्त विचित्र हो गया था, whose heart has become dejected ", रूप चलंगे:—विषयव्यवेत्ता: विषयव्यवेत्तमः, विषयव्यवेत्तमम् विषयव्यवेत्तमौ विषयव्यवेत्तमा विषयव्यवेत्ताभ्याम् विषयव्यवेत्ताभिः इत्यादि
 अम्युर्मिगतः—अम्यु means " जल, water ", अम्यु अम्युनी अम्युनि, इत्यादि रूप चलंगे। ऊर्मि—
 तरंग, लहर, wave, अम्युनां (जलानां) ऊर्मयः इति अम्युर्नय
 (पडो तत्पुष्प), तामु गतः इति अम्युर्मिगतः (सप्तमी तत्पुष्प),
 इसका विरोध " जगो " है, जल की लहरों में प्रतिबिम्बित,
 reflected in the waves of water. प्रायेण—अकम्पन, की
 उठा। किञ्चिन् करुणान्वितः—करुणा, दया, pity, compassion.
 mercy, अन्वितः, युक्तः, filled with, करुणया (दया)
 अन्वितः इति करुणान्वितः (तृतीया तत्पुष्प), being filled
 with pity, being moved with pity. मृदुना—कोमल,
 delicate, soft, gentle. स्वरेण—ध्वनिना, tone.

इदं च रोगव्यसनं प्रजानां

पश्यन् च विश्रम्भमुपैति लोकः ।

विस्तीर्णविज्ञानमहो नराणां

हसन्ति यद्रोगभयैरमुक्ताः ॥ ४६ ॥

PROSE ORDER :—प्रजानाम् इदं रोगव्यसनं पश्यन् लो-
 विश्रम्भम् उपैति। यन् रोगभयैः अमुक्ताः अपि हसन्ति
 (अतः) नराणाम् विस्तीर्णविज्ञानम् अहो ।

HINDI TRANSLATION :—लोगों (मनुष्यमात्र) के इस रोग-
 रूपी संकट को देखने पर भी संसार विश्वास कर रहा है
 चूंकि रोग के भय से मुक्त न होने पर भी लोग हँसते हैं

में नैन कर रहे हैं और मज़ा कर रहे हैं. laugh, i. e., are enjoying the pleasures of the world. विस्नीर्णविज्ञानम्—विस्नीर्णं च तन् विज्ञानम् इति विस्नीर्णविज्ञानम् (कर्मधारय) बड़ा भारी ज्ञान, extensive, great knowledge, अद्भुत-आश्चर्यम्, it is wonderful.

निवर्ततां मृत बहिः प्रयाणा-

नरेन्द्र सर्वैव रथः प्रयातु ।

श्रुत्वा च मे रोगभयं रतिभ्यः

प्रत्याहृतं संकुचतीव चेतः ॥ ४७ ॥

PROSE ORDER :—हे सूत, रथः बहिः प्रयाणात् निवर्ततां नरेन्द्रसद्य एव प्रयातु । रोगभयं श्रुत्वा रतिभ्यः प्रत्याहृतं चेतः संकुचति इव ।

HINDI TRANSLATION :—हे सारथि, रथ बाहर जाने से रुक जाय और राजमहल को चला जाय । रोगों का भय सुनकर मेरा मन भोगों से हटकर सिंकुड़ा-सा जा रहा है ।

ENGLISH TRANSLATION :—O charioteer, let the chariot refrain from going out ; let it go to the royal palace itself. Having heard the danger of disease, my mind, turned away from pleasures, shrinks as it were.

PURPORT IN SANSKRIT :—हे सारथे, रथं बहिर्गमनात् निवर्तय, राजप्रासादं च नय । रोगभयं श्रुत्वा मम मनः सांसारिक-सुखेभ्यो विरक्तं भूत्वा संकोचं प्राप्नोति ।

METRE :—उपजाति ।

NOTES

बहिः—अप्ययम्, it means "out" प्रयाण—जाना going out, प्र+या+ङ्युद्, बहिः प्रयाणात्—बाहर जाने से, from going out. निवर्तनाम्—should turn back मरेन्द्रसद्य—नरायणम् इन्द्रः इति मरेन्द्रः (पण्टी तापुश्य), अर्थात् राजा । मरेन्द्रस्य सद्य इति मरेन्द्रसद्य (पण्टी तापुश्य), राजा के घर को, राजमहल को, 'सद्यन्' मूत्रशब्द है, मपुंसकलिङ्ग है; सद्य मपुंसो सद्य.ति इत्यादि रूप चलेंगे । प्रयातु—गच्छतु, रघुः गच्छतुः पदा भवान् राजगृहं प्रयातु । रतिभ्यः—विषयसुखेभ्यः, सांसारिक सुखों से, from the pleasures. प्रत्याहृतम्—निवृत्तम्, हटा हुआ, turned away from, repelled, प्रति+घ्ना+हृ+त्, संकुचति इव—shrinks as it were; contracts as it were मे चेतः—मम मनः, मम हृदयम्, मेरा चित्त । चेतः चेतसो चेतसि, चेतः चेतसो चेतसि, चेतसा चेतोभ्याम् चेतोभिः । तमे चेतोभ्याम् चेतोभ्यः इत्यादि रूप चलेंगे ।

ततो निवृत्तः स निवृत्तदर्यः

प्रध्यानयुक्तः प्रविवेक सद्य ।

तं द्विस्तथा प्रेक्ष्य च संनिवृत्त

पुर्यागमं भूमिपतिश्चकार ॥ ४८ ॥

PROSE ORDER :—ततः स निवृत्तदर्यः प्रध्यानयुक्तः निवृत्तः सद्य सद्य प्रविवेक । तं च तथा द्वि संनिवृत्तं प्रेक्ष्य भूमिपतिः पुरि

HINDI TRANSLATION :—तब उन (राजकुमार) की प्रसन्नता जाती रही । वह ध्यान में मग्न हो गए और जोड़कर मकान में पुनः गए । उन (राजकुमार) को इस प्रकार दोबारा

Notes

निघर्तनस्य—लौटने का, ... नि—चुन-चुन-चुन-चुन।
 निमित्तम्—कारणम्, cause, आश्रयणम्—अपने के अनेन—
 राजकुमारों, by the prince संन्यक्तम्—छाड़ा हुआ, abandon-
 ed, deserted सम्—स्यञ्च धातु—क। ... he had
 seen sights which produced aversion to worldly
 interests—he saw (1) an old man (2) a diseased man
 (3) a dead body. मार्गस्य—येन मार्गेण कुमारो गच्छन्नासीत्
 तस्य मार्गस्य, जिस राह में राजकुमार जा रहे थे उस राह
 की, of the path by which the prince was passing
 शौचाधिकृताय—शौच means भीषणदृश्यनिवारणादि, मर्कट
 अर्थात् भयानक दृश्यों को दूर करना इत्यादि, clearance, removal
 अर्थात् भयानक दृश्यों को दूर करना इत्यादि, clearance, removal
 of such sights as were fearful. शौच may also
 mean "removal of dust, rubbish etc." अर्थात् कूड़ा करकट
 का हटाना। अधिकृत—नियुक्त, appointed, responsible for,
 entrusted with. शौचे अधिकृतः इति शौचाधिकृतः तस्मै
 शौचाधिकृताय (मर्कटो तन्पुत्राय), मर्कट के लिए नियुक्त पुत्र
 से, with the man responsible for (or appointed for)
 the cleanliness. " क्रुद्धदुर्दृष्ट्यामृषार्यानां यं प्रति कोपः " सूत्र
 से " शौचाधिकृताय " में चतुर्थी है। इस सूत्र का अर्थ है " क्रुद्ध,
 दुष्ट, ईर्ष्य, असूय या उन्मी प्रकार के अर्थ रखने वाली धातुओं
 के योग में, जिस पर कोप हो, वह चतुर्थी में रखी जाता है।
 शुक्रोश—क्रुद्धधातु का अर्थ है " चिन्तना, रोना, शोक करना",
 परंतु यहाँ पर " शुक्रोश " अर्थात् " गुस्सा हुए " यह अर्थ
 बहुत ही उपयुक्त पड़ेगा। क्रुद्धधातु means " to cry out, to
 scream, to weep, to lament "; but here it is very

appropriate to take it in the sense of "became angry"
 कृष्टः अपि—क्रुष्टः अपि, क्रुष्ट होने पर भी, although angry
 उग्रदण्डः—उग्र, कठोर, घोर, severe, harsh. दण्ड, punish-
 ment, उग्रः दण्डः यस्य सः उग्रदण्डः (चदुर्मादि). जिसकी
 सजा कठोर हो, या बड़ी सजा देता हो, whose punishment
 is severe, i. e., he who inflicts severe punishment, i. e.,
 he simply scolded him; he did not inflict any severe
 punishment on him.

भूयश्च तस्मै विदधे सुताय

विशेषयुक्तं विषयप्रकारम् ।

घलेन्द्रियत्वादपि नातिशक्तो

नास्मान्विजयादिति नाथमानः ॥५०॥

PROSE ORDER :—अहमान् न विजयाम् इति नाथमानः (नृपः)
 घलेन्द्रियत्वात् अपि न अतिशक्त (इति) भूयश्च तस्मै
 सुताय विशेषयुक्तं विषयप्रकारं विदधे ।

HINDI TRANSLATION :—“ हम जोगा को छोड़ न दें ” ऐसी
 इच्छा करते हुए राजा ने, इस आशा से कि शायद इन्द्रियों
 की अंधजता के कारण यह कुमार बहुत दूढ़ न हो—उस पुत्र
 के लिए फिर से एक विशेष प्रकार के भांगविजास का
 प्रबंध किया ।

ENGLISH TRANSLATION :—“ May he not leave us ”—
 thus desiring, the king again arranged for his son
 a kind of pleasure which was full of specialties,
 under the impression that the prince was not very
 firm on account of the unsteadiness of the senses.

व्यक्तिः विषयायां प्रकारः इति विषयप्रकार (यच्छी तन्पुत्रम्)
 तम् विषयप्रकारम् । त्रिदशे—अकारात् प्रथमप्रकारेण इति यावत्,
 क्रिया, अर्थात् प्रथम क्रिया. arrange. i. वि उपमार्गपूर्वक धा
 धातु, त्रिदशकार, प्रथम पुण्य, एक वचन ।

यदा च शब्दादिभिरिन्द्रियायै-
 रन्तःपुरे नैव मुतोऽस्य रेमे ।
 तदा षट्श्रियादिशतस्म यात्रां
 रसान्तरं स्यादिति मन्यमानः ॥ ५१ ॥

PROSE ORDER :—यदा शब्दादिभिः इन्द्रियायैः अस्य सुतः
 अन्तःपुरे न एव रेमे, तदा रसान्तरं स्यात् इति मन्यमानः
 षट्श्रियादिः यात्रां स्यादिशतस्म ।

HINDI TRANSLATION :—जब शब्दादिक इन्द्रियविषयो से
 उनके पुत्र ने अन्तःपुर में आनन्द नहीं पाया, तब राजा ने
 यह सोचकर कि कदाचित् कोई दूसरा आनन्द उन्हें आकर्षित
 कर सके, बादर समझ करने की आज्ञा दी ।

ENGLISH TRANSLATION :—When, in the harem, his
 son did not derive pleasure in the various objects
 of senses, such as speech, the king ordered a
 travel outside, under the impression that a diver-
 sion in enjoyments might amuse the prince.

PURPORT IN SANSKRIT :—यदा राजश्रावणे कुमारो संगीत-
 नृत्यादिषु विषयेषु सुखं नाभ्यस्यत् तदा राजाऽऽज्ञापितवान्
 यन् एन षट्श्रिया विविधानि वस्तूनि विविधानि स्थानानि
 च दर्शय, यतः राजा अचिन्तयत् यत् मिश्रमिश्रविषयसंग
 संयोगात् कदाचित् अस्य मनो रमेत् ।

METRE :—उपजाति ।

NOTES.

शब्दादिभिः—शब्द, speech, शब्दः आदिः २
 ते शब्दादिभिः (वदुमादि) इत्यका विशेष्य ॥

इन्द्रियार्थैः—अर्थः, विषय, object.

इन्द्रियायोः तेः इन्द्रियार्थैः. (पठो लघुद्वय),
 by the objects of senses

लघ्या (ल्यात्), नामिका, शिक्षा, नेत्र ।

“शब्द” । लघ्या का विषय है “ शब्द ” ।

“ लघ्य ” । शिक्षा का विषय है “ शब्द ”

“ रूप ” । शब्द कान द्वारा प्रदत्त वि

लघ्या द्वारा ज्ञाना है, जब लघ्या में कोई

पना शब्दना है कि कानों शीघ्र टंडी है,

(या लघ्य) नामिका द्वारा मायूम ॥

पना शब्दना है कि कानों वस्तु पुगण्य

शब्द का पना शिक्षा में शब्दना है

करीना, नमकीन, तीव्र इत्यादि शब्द

हैं । रूप (शब्द, गूण) नेत्र द्वारा

मे ही संसार मर की वस्तुओं की

सद्वर्ती है । इत्यतिर “ शब्द शब्दों लघ्य

या इन्द्रियविषय कहे जाते हैं । इनके

आत्मक ज्ञाना है ज्ञानना विश्वक ज्ञाना

आत्मनि कहेने ज्ञाने विषय मित्र ज्ञाने इ

रुम विषय में आत्मक हो जाता है । जब

विषयों विषय विषयना है लघ्य मनुष्य

द्वेने कहे मनुष्य मत्तकारि, लघ्या इत्यति

विषये लघ्य मत्तकारि इत्यति

in the larcen. न रेमे—आनन्दं सुखं वा न प्राप्तवान्, सुख नहीं पाया, did not derive pleasure. रम्धातु आत्मनेपदी है "रेमे" त्रिद्वार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है। रेमे रेमाते रेमिरे, रम्यादि रूप चलते हैं। रसान्तरं क्यात्—रस, pleasure, अग्यो रसः रसाभ्याम्, यथा अग्यो देशः देशान्तरम्, अग्यो जातः जातान्तरम्। "रसान्तरम्" का अर्थ है "दूसरा आनन्द, आनन्द में कोई परिवर्तन"। अर्थात् घर में कौड़ा न करके बाहर कौड़ा का प्रबन्ध—यही रसान्तरं हुआ। मन् धातु से मानच् प्रत्यय। वदिः—अन्तःपुरात् वदिः, महल से बाहर, outside the palace. यात्राम्—समस्यार्थवात्राम्, travel. स्वादिगतिसम्—आज्ञप्तवान्, आज्ञा दी, ordered।

स्नेहाय भावं तनयस्य पुट्वा

संवेगशोषानविचिन्त्य कारिचन्।

योग्याः समाज्ञापयति स्म तत्र

फलास्वभिज्ञा इति वारमुख्याः ॥ ५२ ॥

PROSE ORDER : - तनयस्य भावं पुट्वा, कारिचत् संवेगशोषान-विचिन्त्य, स्नेहान् कर्तातु अभिज्ञा योग्याः वारमुख्याः तत्र समाज्ञापयति स्म।

HINDI TRANSLATION : - पुत्र की मनोवृत्ति को समझकर और बार बार उमाङ्गने में जो जो दोष पैदा होते हैं उन सब दोषों को बिना विचारे हुए, प्रेम के कारण, कलाओं में निपुण तथा योग्य वेश्याओं को वही (कुमार की शुभ्रता में रहने के लिए) आज्ञा दे दो।

ENGLISH TRANSLATION :—Realising the mentality of the priest, and unmindful of any of the evils of

NOTES.

शब्दादिभिः—शब्द, speech, शब्दः आदिः येषां ते शब्दादयः
ते शब्दादिभिः (वदुयादि) इत्यका विशेष्य " इन्द्रियार्थः " है।

इन्द्रियार्थः—अर्थः, विषय, object. इन्द्रियाणाम् अर्थाः इति
इन्द्रियार्थाः तेः इन्द्रियार्थैः (पष्ठी तत्पुरुष)। इन्द्रियविषयो मे,
by the objects of senses पांच ज्ञानेन्द्रियां होती है—कान,
त्वचा (स्पर्श), नासिका, जिह्वा, नेत्र । कान का विषय है
" शब्द " । त्वचा का विषय है " स्पर्श " । नासिका का विषय है
" गन्ध " । जिह्वा का विषय है " स्वाद " । नेत्र का विषय है
" रूप " । शब्द कान द्वारा प्रदत्त किए जाते हैं । स्पर्श
त्वचा द्वारा होता है, जब त्वचा में कोई चीज़ छू जाती है, ता
पना बतलता है कि कतनी चीज़ ठंडी है, अथवा गर्म है । प्रदत्त
(या गन्ध) नासिका द्वारा माश्रूम होती है । नासिका से
पता चलता है कि कतनी वस्तु दुर्गन्ध करती है अथवा सुगन्ध ।
स्वाद का पता जिह्वा से चलता है । लवट, मीठा, कड़वा,
कमीरा, नमकीन, तीव्र आदि स्वाद जिह्वा से ही माश्रूम होते
हैं । रूप (शकल, गूण) नेत्र द्वारा प्रदत्त किया जाता है । नेत्र
से ही रंगार रंग की वस्तुओं की गूण (आकृति) देखी जा
सकती है । इतिहास " शब्द स्पर्श गन्ध स्वाद रूप " ये इन्द्रियार्थ
या इन्द्रियविषय कहे जाते हैं । इनके द्वारा मनुष्य का मन
आत्मक ज्ञान है अथवा विभक्त ज्ञान है । जब इन्द्रियों की
आकृति काने काने विषय मिल जाते हैं तब मनुष्य का मन
इस विषय में आत्मक हो जाता है । जब इन्द्रियों की क्विचि
विषयीय विषय मिलता है, तब मनुष्य का मन हर जाता है।
जैसे यदि मनुष्य गर्मतादि, तथा हाथमांसिकम बाजा गूणों का
विश्लेष तो मन आकृष्ट हो जाता है । आत्म गुरु—विद्यायां मे,

in the latent. न रेमे—आनन्दं सुखं वा न प्राप्तवान्, सुख
 नहीं पाया, did not derive pleasure. रम्धातु आननेपद्मे
 है "रेमे" तिङ्ङकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है। रेमे
 रेमाते रेमिरे, इत्यादि रूप चलते हैं। रसान्तरं स्यात्—रस,
 pleasure, अन्यो रसः रसास्तरम्, यथा अन्यो देशः देशास्तरम्,
 अन्यो जातः लोकान्तरम्। "रसान्तरम्" का अर्थ है "दूसरा
 आनन्द, आनन्द में कोई परिवर्तन"। अर्थात् घर में बीड़ा न
 करके बाहर बीड़ा का प्रबन्ध—यदी रसास्तरं बुद्ध्याः मग्यमानः
 —समझना बुद्ध्या, thinking, understanding. मन् धातु से
 ष् प्रत्यय। बहिः—अग्निपुरात् बहिः, महल से बाहर, outside
 : palace यात्राम्—समसार्थयात्राम्, travel. श्यादित्शतिसम्
 प्राप्तवान्, आज्ञा दी, ordered).

स्नेहाय भावं तनयस्य पुङ्खा

संवेगदोषानविचिन्त्य कारिचत् ।

योग्याः समाज्ञापयति स्म तत्र

कलास्त्रभिज्ञा इति वारमुख्याः ॥ ५२ ॥

ROSE ORDER : - तनयस्य भावं पुङ्खा, कारिचत् संवेगदोषान-
 विचिन्त्य, स्नेहान्, कजातु अभिज्ञाः योग्याः वारमुख्याः तत्र
 समाज्ञापयति स्म ।

HINDI TRANSLATION :—पुष की मनोश्रुति को समझकर
 और बार बार उमाङ्गने से जो जो दोष पैदा होते हैं उन
 सारे दोषों को बिना विचारे हुए, प्रेम के कारण, कजातुओं
 में निपुण तथा योग्य वेश्याओं को बही (कुमार की छुछुपा
 से रहने के लिए) आज्ञा दे दो ।

ENGLISH TRANSLATION :—Realising the mentality of
 the prince, and unmindful of any of the evils of

in the harem. न रेमे—आनन्दं सुखं वा न प्राप्तवान्, सुख नहीं पाया, did not derive pleasure. मन्धातु आत्मनेपदी है "रेमे" त्रिजकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है। रेमे रेमाते रेमिरे, इत्यादि रूप चलते हैं। रसान्तरं श्यात्—रम. pleasure, अन्यो रसः रसान्तरम्, यथा अन्यो देशः देशान्तरम्. अन्यो लोकः लोकान्तरम्। "रसान्तरम्" का अर्थ है "दुमरा आनन्द, आनन्द में कोई परिवर्तन"। अथात् घर में क्रीडा न करके बाहर क्रीडा का प्रबन्ध—यदा रसान्तरं दृष्ट्वा। मन्थमानः—मन्थनात् दृष्ट्वा, thinking, understanding मन्धातु से जानच् प्रत्यय। बहिः—अन्तःपुरात् बहिः, महल से बाहर, outside the palace यात्राम्—प्रमथार्थयात्राम्, travel श्यादिशक्तिश्च—आज्ञप्तवान्, आज्ञा दी, ordered

स्नेहाद्य भावं मनस्य बुद्ध्वा

संवेगदोषानविचिन्त्य काश्चिन् ।

योग्याः समाज्ञापयति स्म तत्र

कलास्वभिज्ञा इति वारमुख्याः ॥ ५२ ॥

PROSE ORDER :—मनस्य भावं बुद्ध्वा, काश्चिन् संवेगदोषान विचिन्त्य, स्नेहान्, कलासु अभिज्ञाः योग्याः वारमुख्याः तत्र समाज्ञापयति स्म ।

HINDI TRANSLATION :—पुरुष की मनोवृत्ति को समझकर और बार-बार उमाइने से जो-जो दोष पैदा होते हैं उन सब दोषों को बिना विचार के हुए, प्रेम के कारण, कलासु में निपुण तथा योग्य कलाकारों को बर्त (दुमरा की दृष्टि में रहने के लिए) आज्ञा दी है।

ENGLISH TRANSLATION :—Realising the mentality of the prince, and unmindful of any of the ex-

excitement, the king ordered, out of affection, competent courtesans, proficient in arts (to wait upon the prince).

PURPORT IN SANSKRIT :—कुमारस्य विरक्ति-रूपं मनसोऽभिलाषं ज्ञान्या उद्वेगकारणीमूतहेतून् निरस्कृत्य, पुत्र-प्रेमवशात् प्रतीकरणकलासु निपुणाः, चतुराश्च वारांगनाः कुमारस्य शुभ्वायां नियुक्तवान् ।

MEANS :—उपजाति ।

NOTES.

भावम्—अभिप्रायम्, मनोऽभिलाषम्, mental disposition, idea, mentality, i. e., renunciation, (विरक्ति) । कांश्चित्—मयांतपि, ममो (दास्ये) को । संवेगदायान्—संवेग, उद्वेग excitement. संवेगस्य दोषाः इति संवेगदोषाः तान् संवेगदोषान् (यष्टो तत्पुरुष) उमाङ्गने के दोषों को, evils of excitement. अविचिन्त्य—अविगणय, निरस्कृत्य, बिना विचार किए हुए, without thinking of. The king did not think what evils might arise if he gave him cause of irritation or excitement स्नेहान्—प्रेमवशात्, स्नेह मे, प्रेम के कारण, on account of affection. कलासु—in all the arts, वगीकरणादिकलासु, वग में करने की कला तथा हरी प्रहार की अन्य कलायां में । अमिता :—निपुणाः, चतुराः, fully qualified, w. versed, qualifying "courtesans." अमिताः is dative case, plural number, feminine gender. योग्याः—suitable, competent. This is also an adjective, qualifying "courtesans," plural.

क, इस विशेषण पद का " राजमार्ग " विशेष्य है । परीक्षिते-
जीर्णव्यादिभिः परीक्षिते, examined, scrutinised, i. e., free
from old and diseased men. The road was this time
more carefully examined than before, inasmuch as
no old and diseased persons were allowed to pass along
it. अस्यास्य—रहिरानीय, बाहर लाकर, having brought
out. कुमारम्—राजपुत्रम् मिद्वार्यम् । बहिः—अन्तःपुरात् बहिः
अन्तःपुर से बाहर, outside the harem. प्रस्थापयामास—
प्रेषयामास, रवाना कर दिया, sent out.

ततस्तथा गच्छति राजपुत्रे

तैरेव देवैर्विहितो गतासुः ।

तं चैव मार्गं मृतमुद्यमानम्

सूतः कुमारश्च ददर्श नान्यः ॥ ५४ ॥

PROSE ORDER :—ततः राजपुत्रे तथा गच्छति (सति) तै-
रेव देवैः मार्गं, गतासुः (नरः) विहितः । सूतः कुमार-
श्च मृतम् तम् एव मार्गं उद्यमानं ददर्श । अन्यः न ददर्श ।

HINDI TRANSLATION :—इस प्रकार राजपुत्र के जाने समय,
उन्हीं देवताओं द्वारा एक प्राणहीन (शरीर) मार्ग में
रख दिया गया । सारथि और कुमार ने उसी मरे हुए को
मार्ग में ढोये जाने हुए देखा । (किसी) दूसरे ने नहीं देखा ।

ENGLISH TRANSLATION :—Then the prince having
set out in that way, a lifeless man was placed
(on the road) by the selfsame gods. The chario-
teer and the prince saw the very man being
borne on the road. No one else (saw him).

PRECEPT IN SANSKRIT :— यदा राजपुत्र गच्छामसीत्, तदा
 ते एव देवाः एकं प्राणरहितं पुरुषं विरच्य मार्गे स्थापितवन्तः ।
 राजपुत्र मारयित्वा तं मृत पुरुषं स्वहस्त्युवाच्येयैः इमं ज्ञान
 नीयमानमपश्यताम् ।

MEANS :— उपज्ञानि ।

NOTES

राजपुत्रे तथा गच्छति— जब राजपुत्र इस प्रकार चले जा रहे
 थे, while the prince was going in that way भावे
 समसो । गच्छति— गम् धातु + कृ प्रथम, समसो एक वचन
 पुलिङ्ग । नैः एव देवैः— यैः पूर्वं वृद्धरथौ प्रेषितौ, उन्मै देवौ
 द्वारा जिम्होंने पहिले एक वृद्ध और एक रोगी को भेजा था,
 by the selfsame gods as had previously sent an old
 man and a diseased man. गतासुः— असु means " प्राण
 life, गता. (गताः) असुः (प्राणाः) यस्य स गतासुः (बहु-
 मोहि), गतप्राणः, जिसके प्राण निकल गये थे, whose life
 had departed, lifeless. विहितः— हतः, बनाया गया, वि +
 पा + क्त । मृतम्— मरे हुए dead, मृ + क्त । उच्यमानम्— नीय-
 मानम्, ढोया जाता हुआ, ले जाया जाता हुआ, being borne,
 being carried, चद् + कर्मणि शानच्, द्वितीया एकवचन,
 पुलिङ्ग, इसका विशेष्य है " तम् " ।

अथाश्वीन्द्राजमुतः स मृतं
 नरैश्चतुर्भिर्द्वियते क एषः ।

दीर्नर्मनुष्यैरनुगम्यमानो
 यो भूपितोऽश्वास्पवच्छ्यते च ॥ ५५ ॥

"इवास्मिन्", माने "राज्य लेने वाला", "अश्वास्मिन्" माने "न सौम लेने वाला"। अश्वासी अश्वास्मिन् अश्वास्मिन्। अश्वास्मिन् अश्वास्मिन् अश्वास्मिन् इत्यादि। "इवम्" धातु से "इति" प्रत्यय = इवास्मिन्। न इवासी इति अश्वासी (नम् त्प्रत्यय)। अश्वास्मिन्-वेष्टयते वस्त्रादिभिः, टका दृष्ठा है, is covered.. अश् + क्त् धातु, imperative voice, present tense, third person, singular number

ततः स शुद्धात्मभिरेव देवैः

शुद्धाधिवासैरभिभूतचेताः ।

अवाच्यमप्यर्थमिदं नियन्ता

मध्याजदाराथविदीश्वराय ॥ ५६ ॥

OSI ORDER :—ततः शुद्धात्मभिः शुद्धाधिवासैः देवैः एव अभिभूतचेताः अर्थयित् न नियन्ता अवाच्यम् अपि इमम् अर्थम् ईश्वराय मध्याजदार ।

NDI TRANSLATION :—तत्र शुद्ध अन्तःकरण वाले तथा शुद्ध निवासस्थान वाले देवताओं द्वारा जिसका चित्त प्रभावित कर दिया गया था और जो सारा मतलब समझता था उस सारवि ने ईश्वर (सिद्धार्थ) से यह बात बता दी यद्यपि यह बात गुप्त रखने योग्य थी ।

ENGLISH TRANSLATION :—Then the charioteer whose mind had been influenced by the gods who had pure souls, and whose abodes were sacred—the charioteer who was conversant with the meaning (of things), told the prince this truth, although it should not have been disclosed.

PURPORT IN SANSKRIT:—यद्यपि सारथिः सर्वज्ञोभूत् तद्यपि
 शुद्धात्मः करणीः पवित्रस्थाननिवासिभिः देवैः पराभूतात्मः
 करणस्य सारथ्येर्मतिभिश्चा मंजाना । स राजकुमारम् इवम्
 अर्थमकथं यद्यप्ययमर्थो गौपनीय आसीत् यतोऽयमर्थो
 वैराग्योत्पादक आसीत् ।

METRE :—उपजाति ।

NOTES.

शुद्धात्मभिः—शुद्ध, holy, pure. शुद्धः आत्मा येषां ते शुद्धा
 त्मानः तेः शुद्धात्मभिः (षड्भूमीदि), जिनकी आत्माएँ शुद्ध
 (पवित्र) थीं उन देवों द्वारा (by the gods) whose souls
 were pure. शुद्धाधिवासीः—अधिवास, निवासस्थान, abode,
 residence. शुद्धः अधिवासो येषां ते शुद्धाधिवासीः तेः शुद्धा-
 धिवासीः (षड्भूमीदि), जिन देवों का निवासस्थान पवित्र था,
 उन देवों द्वारा, (by the gods) whose abodes were
 sacred. अग्निभूतचेताः—अग्निभूत, प्रभावित, influenced
 चेतस् mind. अग्निभूतचेताः यस्य सः अग्निभूतचेताः (षड्भूमीदि)
 जिन (सारथि) का चित्त प्रभावित कर दिया गया था, जिन
 सारथि के चित्त पर शुद्ध आत्मा वाले तथा शुद्ध निवास स्थान
 वाले देवताओं ने अगला प्रभाव डाल दिया था, यह सारथि
 whose heart had been influenced by the pure-hearted
 (pure-minded) gods residing in holy places. अर्थ-
 विन्—अर्थज्ञा, अर्थज्ञानने वाला, जो सारा मतत्रय समझता
 था, he who knew (understood) the meaning of every
 thing, qualifying the character. निवास—सारथि,
 character. अत्राप्यम्—अत्राप्यमीयम्, गौपनीयम्, that
 which should not have been told; that which should

have been kept secret. इमम् कर्मम्—इस बात को, this matter, this truth. शिवराय—सिद्धापीय, गौतमाय, राज-कुमाराय, to the prince. प्रव्याजदार—कथयामास, कह दिया, disclosed, revealed.

बुद्धीन्द्रियमाणगुणैर्वियुक्तः

सुप्तो विसंश्लेषणकापुभूतः ।

संश्लेष्य संरक्ष्य च यत्नवद्भिः

प्रियाप्रियैस्त्यज्यत एव कोऽपि ॥ ५७ ॥

PROSE ORDER :—बुद्धीन्द्रियमाणगुणैः वियुक्तः शून्यकाष्ठभूतः विसंश्लेषः सुप्तः एव कोऽपि यत्नवद्भिः प्रियाप्रियैः संश्लेष्य संरक्ष्य च त्यज्यते ।

HINDI TRANSLATION :—बुद्धि, इन्द्रिय, प्राण और गुणों से रहित, तिनका और लकड़ी के समान, चेतनाहीन, सोया हुआ यह कैशं मनुष्य प्रयत्नपरायण मित्रों और शत्रुओं द्वारा बांध कर और बचाकर छोड़ा जा रहा है ।

ENGLISH TRANSLATION :—He is someone who is devoid of intellect, senses, life, and qualities; who has (now) become like a straw and wood; who lies unconscious, and asleep, and who, after being tied and protected, is being deserted by striving friends and foes.

PURPORT IN SANSKRIT :—इदानीम् अस्मिन् बुद्धिर्भास्ति; चक्षुर्गदीर्घीन्द्रियं श्लेष्यस्य मरणं, अस्मै प्राणहीनो वर्तते; न कोऽपि शुकोऽस्मिन् विद्यते । अस्मै शून्यवत् काष्ठवत् च निर्विकः संजातः । चेतनाशक्तिरप्यस्य मृष्टा । अस्मै अन्तर्निद्रा प्राणा, मृत इति शेषः । मित्रादि शत्रवभ्यामुं रज्जुभिः

द्वारा, द्विती और अद्विती द्वारा. by friends and foes
 संशय—बाधा आकर, ज्ञान को पनबी रस्सी (गुनबी) से
 धर्मी में बांध देने हैं ताकि जे अजते समय ज्ञान दिजे हुंसे नहीं ।
 सम् + क्त् घातु + क्यप् प्रथम. having been fastened.
 संरक्ष—शृगालादिभ्यः शक्य रक्षणे कृत्वा, शृगालादयो मा
 एते मत्सयेषुः इति शक्य रक्षा कृत्वा, यथाकर, अर्थान् खोज या
 सियार कहीं ज्ञान को न खा जायै इमजिये उमकी रक्षा करके
 having been protected. सम् + रक्ष् घातु + क्यप् प्रथम ।
 त्यज्यते—दोड़ा जा रहा है (इमजान में). is being aban-
 doned, is being forsaken

इति प्रणेतुः स निशम्य वाक्यं

स शुश्रुभे किंचिदुवाच चैनम् ।

एकाकिनस्त्वेव जनस्य नाशः

सर्वप्रमानापयपीदशोऽन्तः ॥ ५८ ॥

PROSE ORDER :—इति प्रणेतुः वाक्यं निशम्य सः शुश्रुभे । सः
 च एनं किंचिन् उवाच—“ किम् एकाकिनः जनस्य तु एव
 नाशः, (अथवा) सर्वप्रमानाम् अन्तः ईदृशः ।

HINDI TRANSLATION :—सारथि की इस बात की गुनकर
 वद (राजकुमार) धरता गया और उससे (सारथि से)
 कुछ कहने लगा, “अकेले इसी आदमी का नाश हुआ,
 अथवा मनुष्यमात्र का अन्त इसी प्रकार होता है” ।

ENGLISH TRANSLATION :—He (the prince) got
 perturbed on hearing these words of the driver,
 and said to him something (like this), “Is it the
 destruction of this single man, or is such the end
 of all mankind ?”

PURPORT IN SANSKRIT :—सुनस्य वचनं धृत्या राजकुमारस्य मनसि मदानुद्वेगोऽभवत् । अतः स तमुवाच, " अस्मी एकस्य मनुष्यस्यायं नाशः, अथवा सर्वे प्राणिनः एवमेव नश्यन्ति " ।

MEASURE :—उपजाति ।

NOTES.

प्रयोगः—सुनस्य, सारथेः, सारथि की, of the charioteer
 प्रयोगा प्रयोगारो प्रयोगारः । अणेतारम् प्रयोगारो प्रयोगारु इत्या
 क्तव्यत्वे । निशब्द—धृत्या, सुनकर, having heard, नि-
 शम् धातु + दयप् प्रायस । शुचुभे—शुच्यो बभूव, उद्विग्नो बभू
 व इति गणा, अतश्चता गणा, became agitated, grew per-
 turbed. शुम् धातु (to be agitated) निद् टाकार, प्रथम पुंस
 एकवचन । सा—राजकुमारः । एतम्—सुनम् । क्विप्—सुन
 एकाकिनः—अकेता, alone. ' एकाकिनः ' शून्य शब्द है, एकाके
 एकाकिनो एकाकिनः । एकाकिनाम् एकाकिनो एकाकिना ।
 एकाकिना एकाकिनाम् एकाकिनः इत्यादि । यही वर " एका-
 किना " पट्टी का एकवचन है और " जलस्य " की विशेषण
 बनाना है । नाशः—destruction, नश + शप् । सर्वत्राणाम्—
 सर्वत्राणाम् नाः प्रश्ना. इति सर्वत्राणा. (कर्मवार्त्त) नाणाम् सर्व
 प्रश्नाणाम्, सभी प्राणिनों का, of all living beings, of all
 kindred. ईदृगाः—इसी प्रकार का, such, similar

नतः प्रयोगा पर्वणि इव तस्यै

म ईवत्रानापयपयनवृत्तौ ।

हीनस्य म पश्य मशान्यनो वा

मईस्य मईं निवर्त्त निवर्त्तः ॥ ५९ ॥

PROSE ORDER :— ततः प्रवेश तस्मै वदति स्म, “ अयं सर्व-
प्रजाताम् अग्निकर्ता । लोके दीनस्य, मध्यस्य महात्मनः वा
सर्वस्य विनाशः नियतः । ”

HINDI TRANSLATION :—तब सारथि ने उनसे (राजकुमार
से) कहा, “ यह सभी मनुष्यों का नाश करने वाला है ।
(इस) संसार में नीच का, बीच वाले का, महात्मा का—
सभी का नाश अवश्यंभावी है । ”

ENGLISH TRANSLATION :—Then the charioteer said to
him, “ This is the destroyer of all mankind. In
this world, the destruction of everyone—the low,
the mediocre, and the high-souled—is inevitable. ”

PURPORT IN SANSKRIT :—सारथिः कुमारमवदत् “ सर्वे
मनुष्याः अनेन नाशयन्ते । अस्मिन् संसारे सर्वेषां प्राणिनां
नाशः ध्रुवः । मृत्युरिदं न विचारयति “ अयं निहृष्टः, अयं
मध्यमा, अयम् उत्तमः ” इति ।

METRE :—उपजाति ।

NOTIS.

अग्निकर्ता—करोतीति कर्ता, अग्नस्य (नाशस्य) कर्ता
इति अग्निकर्ता (यत्रो तत्पुण्य), destroyer. लोके—अस्मिन्
संसारे, इस संसार में, in this world. दीनस्य—नीच का,
of the low. मध्यस्य—मध्यमधेयस्य स्थितस्य, यो नातिनीचः,
नात्युच्चः स मध्यमः, मध्यम हैसियत वाले का, बीच की हैसियत
वाले का, of the mediocre. महात्मनः—महान् (great, high)
आत्मा (soul) यस्य स महात्मा तस्य महात्मनः (बहुमीहि)
महात्मा का, of the high-souled. महात्मा महात्मनो
महात्मानः । महात्मानम् महात्मानो महात्मनः । महात्मना

महात्मभ्याम् महात्मभिः इत्यादि रूप धर्तव्ये । यदा पर "महात्मन" यद्वी का एक यद्यन द्वे । सर्वस्य—सर्वत्रस्य, सप्त का, of all. विनाशः—नाश, destruction, वि+भञ् घातु+घम् प्रत्यय । नियतः—घ्नः, निश्चितः, अयश्यमायी, sure, certain, inevitable.

ततः स धीरोऽपि नरेन्द्रगुणः

भुत्वैव मृत्युं विगताद् सपः ।

अंगेन सदित्यप्य न कृपराश्रं

प्रोवाच निहादरता हरणे ॥ ६० ॥

PROSE ORDER :—ततः धीरः अपि स नरेन्द्रगुणः मृत्युं घ्नन्ना एव सपः विगताद्, अंगेन च कृपराश्रं सदित्यप्य निहादरता इत्येष प्रोवाच ।

HINDI TRANSLATION :—यद्यपि राजद्वार बुद्धचरित से, जगति मृत्यु को मृतने ही ने जीव बुद्धिवादी वने, धीर रूप के वृद्ध के रूप भाग को कर्मों में समाकर (विगता का) मन्त्री (अतिगुण) इतर से बोलें ।

EXPLAN TRANSLATION :—Then the prince, although mortal, has not dejected himself by hearing of death, and embracing the firmness of the path of the character with his character, speaks in a grave tone.

FOOT-NOTE :—यद्यपि राजद्वारः मन्त्रीवैला कायम्, जगति मृत्युं घ्नन्नेव विगता मन्त्र, इत्येव च इत्येव मृत्युदशात्तन्मात्रं च मन्त्रीयत् अतिगुण इत्येवम् ।

इत्येवम् :—इत्येवम् ।

PROSE ORDER :—इयं च प्रजानां निष्ठा नियतं (अवश्यं) प्रमाद्यति । लोकः च त्यक्तमयः । नृणां मनांसि कठिनानि (इति) जंके तथाहि अथनि स्वस्याः वर्तमानाः ।

HINDI TRANSLATION :—लोगों का यह विश्वास अवश्य ही ग़लत है । संसार ने भय त्याग दिया है । मैं सन्देह करता हूँ कि मनुष्यों का मन कठिन है, इसीलिये तो वे रास्ते में (विरकुल) निश्चिन्त (बेखबर) खड़े हैं ।

ENGLISH TRANSLATION :—This faith of the people is surely mistaken; the world has given up all fear. I apprehend that the minds of men are harsh, for they are standing unconcerned on the road.

PERPORT IN SANSKRIT :—लोकस्य योऽयं विश्वासः यत् “नाहं मरिष्ये” स मिथ्या । लोकः मरत्यसम्भ्रमि-मपरहितः संज्ञातः । अहं तु मन्ये यत् जनानां मनांसि कठोराणि जातानि, अतश्च ते निश्चिन्ता भूत्वा मार्गे तिष्ठन्ति ।

METRE :—उपजाति ।

NOTES.

निष्ठा—faith, confidence (Apte's Dictionary)
 निश्चयम्—(अवश्य) अवश्यमेव, भ्राम्, certainly, surely.
 प्रमाद्यति—is mistaken. त्यक्तमयः—मय is neuter gender (Apte's Dictionary) त्यक्त, given up, abandoned, त्यक्तं मयं येन नः त्यक्तमयः (बर्तुर्वादि),
 तिमहे द्वारा मय त्याग दिया गया है, by whom fear has been given up. नृणां—नराणां, मनुष्यों के, of men.
 मूलशब्द 'नृ' है । 'नृ' माने 'मनुष्य' । यही बहु वचन

PROSE ORDER :—इयं च प्रजानां निष्ठा नियतं (अच्ययं) प्रमाद्यति । लोकः च त्यक्तमयः । नृणां मनांसि कठिनानि (इति) जंके तथाहि अच्ययि स्वस्याः वर्तमानाः ।

HINDI TRANSLATION :—लोगों का यह विश्वास अच्यय ही गजत है । संसार ने भय त्याग दिया है । मैं सन्देह करता हूँ कि मनुष्यों का मन कठिन है, इसीलिये तो वे रास्ते में (विश्कुल) निश्चिन्त (बेखबर) खड़े हैं ।

ENGLISH TRANSLATION :—This faith of the people is surely mistaken; the world has given up all fear. I apprehend that the minds of men are harsh; for they are standing unconcerned on the road.

PURPORT IN SANSKRIT :—लोकस्य योऽयं विश्वासः यत् " नाहं मरिष्ये " स मिथ्या । लोकः मरणसम्बन्धि-मयरहितः संजातः । अहं तु मन्ये इत् जनानां मनांसि कठोराणि जातानि, अतएव ते निश्चिन्ता भूत्वा मार्गं तिष्ठन्ति ।

METRE :—उपजाति ।

NOTES.

निष्ठा—faith, confidence (Apte's Dictionary)
 नियतम्—(अच्यय), अच्ययमेव, घृणम्, certainly, surely.
 प्रमाद्यति—is mistaken. त्यक्तमयः—मय is neuter gender (Apte's Dictionary) त्यक्त, given up, abandoned, त्यक्तं मयं येन सः त्यक्तमयः (यदुमीहि), जिसके द्वारा भय त्याग दिया गया है, by whom fear has been given up. नृणां—नराणाम्, मनुष्यों के, of men. मूल शब्द ' नृ ' है । ' नृ ' माने ' मनुष्य ' । पृष्ठी बहु वचन

तृतीयः सर्गः

" तथा " नयाम् " दो रूप होते हैं। मनासि—
 minds. अप्यनि—मार्ग, मार्ग में, in the way,
 road. मूल शब्द " अप्यन् " है (पुंलिङ्ग), अप्या
 अप्यामः, अप्यामम् अप्यामौ अप्यनः, अप्यना
 म् अप्यमिः इत्यादि रूप चलेंगे। " अप्यनि"
 एक लघन है। श्रद्धाः—calm, unagitated,
 serene. वर्तमानाः—exist, remain. घृन्+शामच्।

तस्मादयः सूत निवर्ततो नो
 विहार योग्यां न हि देशपालौ ।

जानन् विनाशं कथपार्तिकाले

सचेतनः स्यादित् हि प्रसक्तः ॥ ६२ ॥

ROSE ORDER :—तस्मात्, (हे) सूत नः स्याः निवर्तताम् ।
 हि देशपालौ विहारयोग्यौ न । पार्तिकाले विनाशं जानन्
 (अपि), सचेतनः कथम् इत् प्रसक्तः स्यात् ।

HINDI TRANSLATION :—इस कारण, हे सूत, हमारा रूप
 छोट जाय, स्थान और समय कुछ भी हमारे भ्रमण के
 योग्य नहीं है। (इस) कष्टपूर्ण काल के अन्दर (जं
 विनाश भरा हुआ है उस) विनाश को जानते हुए भी
 जानी पुकर इसमें मजा कैसे आसक्त हो सकता है ।

ENGLISH TRANSLATION :—Therefore, O charioteer, let
 my chariot, turn back, because neither the place
 the time is suitable for my journey. How
 can a man indulge in this, when he
 is in this miserable

of the king. ब्रुवाणे—कथयति, कहने पर, भू घातु+शानच् प्रत्यय, पुलिग सप्तमी एक वचन । सः—सुरः । तं रथं—उस रथ को, that chariot. न एव निवर्तयामास—नहीं लौटाया, did not turn back. नरेन्द्रशासनात्—नरायणम् इन्द्रः इति नरेन्द्रः (पठो तत्पुण्य), नरेन्द्रस्य शासनम् इति नरेन्द्रशासनम् तस्मात् नरेन्द्रशासनात् (पठो तत्पुण्य) राजाज्ञया, according to the king's order. विशेष-युक्तम्—विशेष, speciality. विशेषैः युक्तम् इति विशेष युक्तम् (तृतीया तत्पुण्य), आकर्षणविशेषैः परिपूर्णम् खास खास बातों से भरा हुआ full of specialities. This adjective qualifies the noun. " वनम् " । सपद्म-खण्डम्—पद्म, कमल, lotus, पद्मखण्डम्, a collection of lotuses, a multitude of lotuses. विद्यमानं पद्मखण्डं यस्मिन् तत् सपद्मखण्डम् (बहुव्रीहि), qualifying " वनम् " । सपद्मखण्डं वनम्—a grove containing a collection of lotuses. निर्ययो—निर्गमाम, गया, went to.

ततः शिवं कुमुमितशालपादपं

परिम्रपत्यमुदितमसकोकिलम् ।

निधानवत्सकमलचारुदीर्घिकम्

ददर्श तद्वनमिव नन्दनं वनम् ॥६४॥

PROSE ORDER :—ततः शिवं कुमुमितशालपादपं परिम्रपत्य-मुदितमसकोकिलं निधानवत् सकमलचारुदीर्घिकं नन्दनं वनम् इव तद्वनं ददर्श ।

HINDI TRANSLATION :—तब उन्होंने भावमय तट पर वन-खण्डों की देखा—वन (वनखण्ड) में वृक्षों की वन-खण्डों की

शुभ्र जगे ये, प्रसन्न तथा मत्तवाजी कोयलें (उधर उधर)
उड़ रही थीं, जलाशय विद्यमान थे, कमलों भे भरी हुई
सुन्दर भीलें (बाघाजियाँ) थीं :

ENGLISH TRANSLATION :—Then he saw the pleasant
grove which resembled the Nandan garden
(Indra's garden); which contained blossoming
young plants; which abounded with infatuated gay
cuckoos flying about; which had pools of water,
and beautiful lakes (wells) full of lotuses.

PURPORT IN SANSKRIT :—तद्मन्तरं कुमारो वनमेकमति
सुखकरमपश्यत् । कोकिलो तद्भ्रमिति धर्यायति । मन्दमवन-
तुनयम् , यद्भ्रमं सुखं मन्दमवनदर्शनेनापश्यते ताद्भ्रमं सुख-
मस्यापि दर्शनेन अभूत् । तस्मिन् वने बहवः प्रकुञ्जिताः
जघुपूताः शुशुभिरे , इतस्ततो जयमानाः आनन्दपरिमिता
उमस्ताः कोकिला इद्भ्रमरे, जलाशयाभ्यापि तत्र भूरिशो
ऽभवन् , कमलपरिपूजाः कासारारस्तत्रानेकेऽशोभन्त ।

METRE :—दृषिप ।

NOTES.

शिवम्—सुखकरम् , बह्वायकरम् , suspicious, pleasant;
this adjective qualifies the noun वनम् । कुसुमितवाज-
पादपम्—कुसुमित, प्रकुञ्जित, blossoming, flowering,
कृत्रे दुःखः कुसुमानि संजातानि पश्यन् इति कुसुमिताः, कुसुम-
इतत्, " तदस्य संजातं तारकारिभ्य इतत् " शुभ्र के द्वारा
" इतत् " प्रापय दुष्पा । पञ्ज—सूत्र, जघु, छोटे छोटे, small,
young. पादप—शुभ्र, पेड़, trees, बाजाशयते पादपाद इति
बाजपादपाः (कर्मपादप), छोटे छोटे शुभ्र, young plants.

of the king. घुषागं—कथयति, कहने पर, घू घातु+शानच् प्रथय, पुलिग सप्तमी एक वचन । सः—सुतः । तं रथं—उस रथ को, that chariot. न एव निवर्तयामास—नहीं लौटाया, did not turn back. नरेन्द्रशासनात्—नरणांम् इन्द्रः इति नरेन्द्रः (पद्यो तत्पुरुष), नरेन्द्रस्य शासनम् इति नरेन्द्रशासनम् तस्मात् नरेन्द्रशासनात् (पद्यो तत्पुरुष) राजाज्ञया, according to the king's order. विशेष-युक्तम्—विशेष, speciality. विशेषैः युक्तम् इति विशेष युक्तम् (तृतीया तत्पुरुष), आकर्षणविशेषैः परिपूर्णम् खास खास बातों से भरा हुआ full of specialities. This adjective qualifies the noun. “ घनम् ” । सपद्म-खण्डम्—पद्म, कमल, lotus, पद्मखण्डम्, a collection of lotuses, a multitude of lotuses. विद्यमानं पद्मखण्डं यस्मिन् तत् सपद्मखण्डम् (बहुव्रीहि), qualifying “ घनम् ” । सपद्मखण्डं घनम्—a grove containing a collection of lotuses. निर्ययी—निर्जंगाम, गया, went to.

ततः शिवं कुसुमितबालपादपं

परिभ्रमत्यमुदितमत्तकोकिलम् ।

निपानयत्सकमलचारुदीर्घिकम्

ददर्श तद्वनमिव नन्दनंवनम् ॥६४॥

PROSE ORDER :—ततः शिवं कुसुमितबालपादपं परिभ्रमत्य-मुदितमत्तकोकिलं निपानयत् सकमलचारुदीर्घिकं नन्दनं घनम् एव तद्वनं ददर्श ।

HINDI TRANSLATION :—तथ उन्दोने नन्दनवन तदय वस घणीचे को देखा—उस (घणीचे) में फूलो हुए छोटे छोटे

पूत लगे थे, प्रसन्न तथा मतवाली कोयलें (इधर उधर)
उड़ रही थीं, जलाशय विद्यमान थे, कमलों में भरी हुई
सुन्दर मीलें (बावलियाँ) थीं :

ENGLISH TRANSLATION :—Then he saw the pleasant
grove which resembled the Nandan garden
(Indra's garden); which contained blossoming
young plants, which abounded with infatuated gay
cuckoos flying about; which had pools of water,
and beautiful lakes (wells) full of lotuses.

PURPORT IN SANSKRIT :—तद्गमस्तरं कुमारो वनमेकमति
सुखकरमपर्यत् । कीदृशी तद्गममिति धर्षयति । नन्दनवन-
तुन्यम्, पद्मं सुखं नन्दनवनदग्नेनापद्यते तादृशं सुख-
मस्यापि दग्नेन अभूत् । तस्मिन् वने बहवः प्रफुल्लिताः
जयुवताः ह्युमिरे, इतद्वती जयमानाः ध्यानपरिमृता
उमस्ताः कीकिला दृग्गरे, जलाशयाद्यापि तत्र भूरिशो
ऽभवन्, कमलपटिपुष्पाः काताराद्यत्रामेवेऽगोमस्त ।

METRE :—दक्षिण ।

NOTIS.

शिवम्—सुखकरम्, उज्यायकरम्, auspicious, pleasant;
this adjective qualifies the noun वनम् । कुसुमितशाल-
पादपम्—कुसुमित, प्रफुल्लित, blossoming, flowering,
फूलों से युक्त, कुसुमानि संज्ञातानि एवम् इति कुसुमिना, कुसुम +
इत्प्, " तदस्य संज्ञातं नारकादिभ्य इत्प् " सूत्र से द्वारा
" इत्प् " प्राप्य दुष्ठा । पत्र—पत्रा, लघु, छोटे छोटे, small,
young. पादप—पूत, पेड़, trees, बालाद्यरे पादपश्च इति
बालपादपाः (कर्मपादप), छोटे छोटे पूत, young plants.

कुसुमिताः पालपादपाः यस्मिन् तत् कुसुमितपालपादम्
 (वृक्षोद्दि), यद् गच्छ द्वितीया विभक्ति का एक वचन है.
 " वनम् " का विग्रहण है, इसका अर्थ है " वह वन जिसमें
 फूले हुए छोटे छोटे वृक्ष लगे थे, which contained blossoming
 young plants. " परिग्रमप्रमुदितमलकोकिलम्—परिग्रमन् ।
 घ्रमण्य करती हुई, उड़ती हुई, flying about, परि + ग्रम् घान्
 + गन् प्रथम । प्रमुदित—आनन्दित, प्रदृष्ट, cheerful, gay-
 मल—intoxicated (Apte's Dictionary). मलाद्य ते
 कोकिलाद्य इति मलकोकिलाः (कर्मधारय), मलनाली कायने,
 intoxicated cuckoo. प्रमुदिताद्य मलकोकिलाद्य इति प्रमुदित
 मलकोकिलाः (कर्मधारय), प्रमत्त और मलनाली कायने,
 gay and intoxicated cuckoo. परिग्रमन् प्रमुदितमल-
 कोकिलाः यस्मिन् तत् वनम् परिग्रमप्रमुदितमलकोकिलम्
 (वृक्षोद्दि), " वनम् " का विग्रहण है । इसका अर्थ हुआ
 " जिसमें प्रमत्त और मलनाली कायने उड़ रही थीं, in which
 gay and intoxicated cuckoo were flying about. "
 निघण्टवन्—निघण्टु *nicantus* *pan* *1* *vater* " आद्यावन्तु
 निघण्टे इत्याद्युपहृतत्रागणे इत्यमरः । निघण्टानि निघण्टु अरण्य,
 इति निघण्टवन्, अद्यान् त्रयागवा वात्रा त्रयागवा ये वृक्ष,
 इति अत्र *pan* *1* *vater* *1* *vater* निघण्टु मन्तु । " निघण्टवन् "
 द्वितीया का एक वचन है, " वनम् " का विग्रहण है । निघण्टवन्
 निघण्टवन्ती निघण्टवन्ति इत्यादि न्यूनक निघण्टे इत्यमरः ।
 मन्त्रमन्त्रादौ द्विदम्—द्विदिका वागी, कायात्, वापनी,
 द्विदम् द्विदम्—काय—मन्त्रम्, *nicantus* *pan* *1* *vater* मन्त्रमन्त्र
 कर्मण्ये, कर्मण्ये मे मन्त्र वृक्षा, इति अत्र *pan* *1* *vater* निघण्टवन्ति
 मन्त्रमन्त्रिर्विद्वन् वा मन्त्रमन्त्रा (वृक्षोद्दि), अन्वयान्
 द्विदिकाद्य कर्मण्ये काः द्विदिकाद्य इति आकरोद्विदिका-

कमलधारय), सुन्दर झीलें या बाधलियाँ, beautiful lakes
wells. सकमलाः घाटदोषिकाः यस्मिन् तत् सकमलघाट-
दोषिकम् (बहुमोहि), " वनम् " का विशेषण है जिसमें
झिलों से भरी हुई सुन्दर झीलें (बाधलियाँ) थीं, which
had beautiful lakes (wells) full of lotuses. मन्दनं वनम्
इव—" मन्दनवन " इन्द्र के बगीचे का नाम है, " Nandan "
is the name of Indra's garden. मन्दनं वनम् इव—मन्दन
वनतुल्यं तत् उद्यानम्, मन्दनवनतुल्यं उस बगीचे को, which
resembled the Nandan garden.

वरांगनागणकलिलं नृपात्मज-

स्ततो पलाटनमभिनीयते स्म तत्

वराप्सरोन्वितमलकाधिपालयम्

नवप्रतो मुनिरिव विष्णुकातरः ॥६५॥

PROSE ORDER :—ततः वराप्सरोन्वितम् अलकाधिपालयं
नवप्रतः विष्णुकातरो मुनिः इव नृपात्मजः तत् वरांगना-
गणकलिजं वनं बलात् अभिनीयते स्म ।

HINDI TRANSLATION :—जिस प्रकार नया प्रत (संघम)
पाला तथा विद्या से भयभीत मुनि, सुन्दर अप्सराओं से भरे
हुए कुबेर के घर में पहुँचाया जावे, वसी प्रकार सुन्दर
शिवों के समूह से परिपूर्ण बगीचे में राजकुमार जषदस्ती
पहुँचाए गए ।

ENGLISH TRANSLATION :—Just as a sage who, having
recently undertaken a vow, is afraid of obstacles,
is escorted to the abode of Kubera, which is full of
Ansharasas, in the same way the

कुसुमिताः वाज्जपादपाः यस्मिन् तत् कुसुमितवाज्जपादप
 (बहुव्रीहि), यह शब्द द्वितीया विभक्ति का एक वचन ।
 “ वनम् ” का विशेषण है, इसका अर्थ है “ वह वन जिस
 फूलों हुए छोटे छोटे वृक्ष लगे थे, which contained blossoming
 young plants. ” परिभ्रमत्प्रमुदितमत्तकोकिलम्—परिभ्रमत्
 भ्रमण करती हुई, उड़ती हुई, flying about, परि+भ्रम् घा
 +शतृ प्रत्यय । प्रमुदित—आनन्दित, प्रहृष्ट, cheerful, gay
 मत्त—intoxicated (Apte's Dictionary). मत्ताश्च
 कोकिलाश्च इति मत्तकोकिलाः (कर्मधारय), मतवाली कोयलें
 intoxicated cuckoos. प्रमुदिताश्च मत्तकोकिलाश्च इति प्रमुदित
 मत्तकोकिलाः (कर्मधारय), प्रसन्न और मतवाली कोयलें,
 gay and intoxicated cuckoos. परिभ्रमन्तः प्रमुदितमत्त
 कोकिलाः यस्मिन् तत् वनम् परिभ्रमत्प्रमुदितमत्तकोकिलम्
 (बहुव्रीहि), “ वनम् ” का विशेषण है । इसका अर्थ हुआ
 “ जिसमें प्रसन्न और मतवाली कोयलें उड़ रही थीं, in which
 gay and intoxicated cuckoos were flying about. ”
 निपानवत्—निपान means “ pool of water ” आदावस्तु
 निपानं स्यादुपकूपजलाशये इत्यमरः । निपानानि विद्यन्ते अस्य,
 इति निपानवत्, अर्थात् जलाशयों वाला, जलाशयों से युक्त,
 full of pools of water. निपान+मनुप् । “ निपानवत् ”
 द्वितीया का एक वचन है, “ वनम् ” का विशेषण है । निपानवत्
 निपानवती निपानवन्ति इत्यादि नपुंसक लिंग में रूप चलेंगे ।
 सकमलघाटदीर्घिकम्—दीर्घिका घाटी, कासार, बाघजी,
 झील, lake. घाट—सुन्दर, beautiful. सकमल—कमल से
 सहित, कमल से भरा हुआ, full of lotuses. विद्यमानानि
 कमलानि यस्मिन् सा सकमला (बहुव्रीहि), घाटव्यथाः
 दीर्घिकाश्च अथवा घाट्यंश्च ताः दीर्घिकाश्च इति घाटदीर्घिकाः

तम् अजकाधिराजयम् (वृष्ठी तत्पुरुष) ' अजक ' is both masculine and neuter. अजकाधिराजयम्—अजका के स्वामी का घर, अर्थात् कुबेर का घर, the abode of the lord of Ataka, i. e., the abode of Kuber. नवमवः—नव, नया, हाल का, new recent. नवः मतः (मतम्, यह शब्द पुंलिङ्ग तथा नपुंसक दोनों है) यस्य स नवमतः (बहुव्रीहि), जिसका मन अभी नया ही हो, जिसने अभी हाल ही में मत ठाना हो, whose vow is recent, who undertook vow very recently. विघ्नकातरः—विघ्न, बाधा, obstacles. कातर—afraid. विघ्नः कातरः इति विघ्नकातरः (तृतीया तत्पुरुष), विघ्नों से भयभीत, afraid of obstacles. जो मुनि हाल ही में मत लिये रहता है वह बहुत डरता है कि सांसारिक प्रलोभन भेरी तपश्चर्या में बाधा न डाल दें. कहीं में सुन्दर स्त्रियों तथा अन्य भोगविजास के साधनों से खजायमान न हो जाऊँ कि भेरी तपस्या में विघ्न पड़ जाय ।

वरांगनागणकजिजम्—वरांगना, स्त्री, women, ladies; गण, समूह, multitude कजिज, भ्राम full of (Apte's Dictionary) वरांगना इति वरांगनाः (कर्मधारय) सुन्दर स्त्रियाँ, beautiful women. वरांगनानां गणः इति वरांगनागणः (वृष्ठी तत्पुरुष), सुन्दर स्त्रियों का समूह, multitude of beautiful women. वरांगनागणेन कजिजम् इति वरांगनागणकजिजम् (तृतीया तत्पुरुष), सुन्दर स्त्रियों से भरा हुआ, full of multitudes of beautiful women. वजात्—दृष्ट्वा, अभिञ्जया, इच्छायाम् असत्याम् अपि, ज्ञाद्दस्ती, इच्छा न होने पर भी । perforce, forcibly. अभिनीयते स्म—प्रापिता, पहुँचाए गए, ले जाये गए, was taken to, was escorted to.

was perforce escorted to the grove which was full of multitudes of handsome women.

PURPORT IN SANSKRIT:—यथा कुबेरमवनं नीयमानो नर
प्रतां मुनिः “मम तपश्चर्यायां तत्रत्याः सुन्दराप्सरसो विप्रं
मा कार्पुः” इति विभेति तथैव राजकुमारः इन्द्राविष्टं
तस्मिद्युद्याने अभिनीयते स्म । तत्र गलाडनेकाः सुन्दरस्त्रीः
अपश्यत् ।

METRE:—दक्षिण ।

NOTES.

वराप्सरोल्लितम्—वर, भेष, सुन्दर, handsome, lovely, beautiful; अप्सरम्, अप्सरायै; अल्लितम्, युक्तम् मया दृष्टम्, full of; वराद्यताः अप्सरसश्च इति वराप्सरसाः (कर्मधारय) सुन्दर अप्सरायै, beautiful Apsarasas वराप्सरोल्लिता अल्लितम् इति वराप्सरोल्लितम् (पृथीया तत्पुंस), सुन्दर अप्सरासो मे मया दृष्टम्, full of lovely Apsarasas. “वराप्सरोल्लितम्” विशेषण द्वै “अत्रकाधिपान्तयम्” च । अत्रकाधिपान्तयम्—अत्रका is the name of the abode of Kubera, the lord of the Yakshas. It was supposed to be on one of the peaks of the Himalaya, above the peak of Meru “अत्रका कुबेरपुत्रोऽसिद्धिर्वा नृणां दुःखते” इत्यमरः । Also compare “मन्त्रणा मे वराप्सरसा नाम यत्प्रेतसाक्षात्” —मैत्रयुज पृथर्व-श्लोक ७ । आत्रय—मन्त्र, विप्रासंज्ञात्, शक्ति, शक्तिः अत्रकायः (मन्त्रमन्त्रणार्थं) अत्रिका (अप्री) इति अत्रकायः (पृथी तत्पुंस), अत्रका द्वै वराप्सी, अर्थात् कुबेर, the Lord of Akas, i. e., Kubera अत्रकायः अत्रयः (आत्रयम्) इति अत्रकायः

तम् अजकाधिपाजयम् (चष्टी तत्पुरुष) ' अजय ' is both masculine and neuter अजकाधिपाजयम्—अजका के स्वामी का घर, अर्थात् कुबेर का घर, the abode of the lord of Alaska, & c., the abode of Kuber नवग्रहा—नव, नया, हाल का, new recent. नवा व्रतः (व्रतम्, यह शब्द पुंलिंग तथा नपुंलक दोनों द्वे) वर्य स नवग्रहः (बहुव्रीहि), जिसका मन अभी नया ही हो, जिसने अभी हाल ही में व्रत ठाना हो, whose vow is recent, who undertook vow very recently. विघ्नकातरः—विघ्न, बाधा, obstacles. कातर—afraid. विघ्नोः कातरः इति विघ्नकातरः (तृतीया तत्पुरुष), विघ्नो से भयभीत, afraid of obstacles. ओं मुनि हाल ही में व्रत लिये रहता है वह बहुत करता है कि सांसारिक प्रलोभन भेरी तपस्वियों में बाधा न डालें; कहीं में सुन्दर स्त्रियों तथा अन्य भोगविजास के स्थापनों से अजायमान न हो जायें कि भेरी तपस्वियों में विघ्न पड़ जाय ।

वरांगनागणकजिजम्—वरांगना, स्त्री, women, ladies; गण, समूह, multitudo. कजिज, स्वाम full of (Apte's Dictionary). वरांगनाः अंगनाद्य इति वरांगनाः (कर्मधारय) सुन्दर स्त्रियाँ, beautiful women. वरांगनानां गणः इति वरांगनागणः (चष्टी तत्पुरुष), सुन्दर स्त्रियों का समूह, multitude of beautiful women. वरांगनागणैः कजिजम् इति वरांगनागणकजिजम् (तृतीया तत्पुरुष), सुन्दर स्त्रियों से भरा हुआ, full of multitudes of beautiful women. बजात्—ददात्, अनिच्छया, इच्छया असायाम् अपि, जबरदस्ती, इच्छा न होने पर भी । perforce, forcibly. अभिनीयते स्म—प्रापितः, पहुँचाय गये, ले जाये गये, was taken to, was escorted to.



